S.K.C.

CATALOGUE OF BOOKS
HINDI MANDIR PRAYAG

IGNCA

of Books

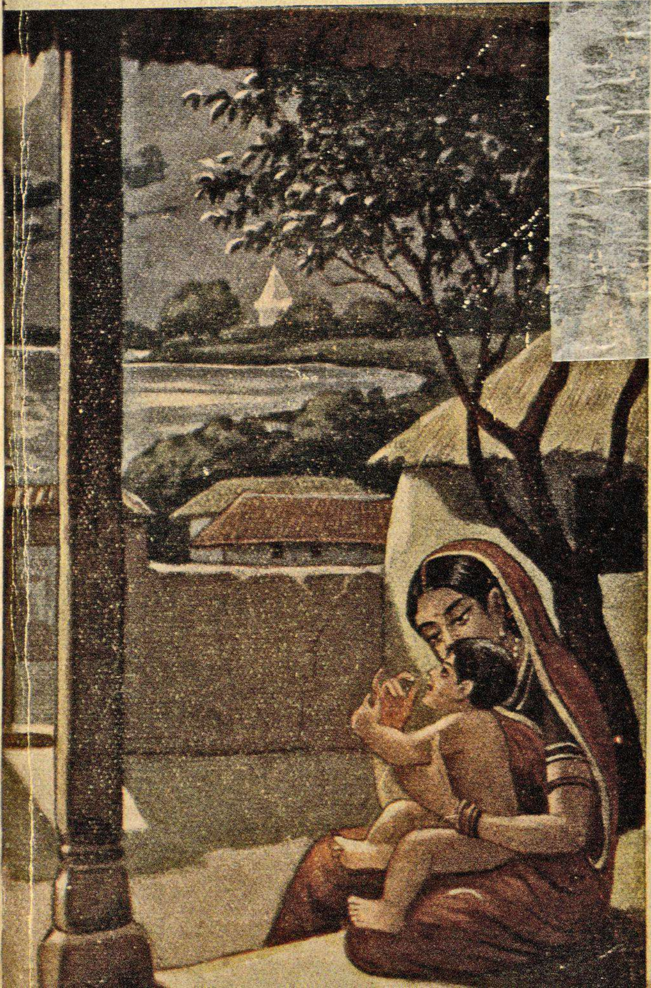
lished by
-MANDIR
AHABAD
India)

हि[illegible]न्दिर, प्रयाग

हिन्दी में उच्चकोटि के प्रकाशक और विक्रेता

[१९३७]

का



हमारी पुस्तकें स्वदेश ही में नह।, [illegible] देशों में भी बड़े चाव से पढ़ी और पढ़ाई जाती हैं। हमारी पुस्तकें जर्मनी, इँग्लैंड, [illegible]टली, नेटाल, लेनिनग्राड और साउथ अमेरिका तक पहुँच गई [illegible]। पुस्तकों पर आई हुई सम्मतियाँ पढ़कर और हमारे कथन [illegible]ी सचाई का प्रमाण पाकर आप इस बात का सुख अनुभव [illegible]रेंगे कि हमारी पुस्तकों ने हिन्दी-साहित्य के गौरव को कितना बढ़ाया और उसे कहाँ तक पहुँचाया है। हमारे यहाँ से प्रकाशित पुस्तकें पढ़कर आप थोड़े ही पैसे में इतना लाभ प्राप्त करेंगे जो लाखों के मूल्य का होगा। हमारे यहाँ से प्रकाशित कई कविता-पुस्तकों के अनुवाद दक्षिण भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं में हो गये हैं, यह सौभाग्य हिन्दी-जगत् में अभी तक [illegible]ल हमें ही प्राप्त है।

मैनेजर

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पुस्तकें मँगानेवालों के लिए आवश्यक सूचनाएँ

१—पुस्तकें मँगानेवालों को अपना नाम, गाँव, पोस्ट और ज़िला साफ़-साफ़ लिखना चाहिये।

२—प्रत्येक आर्डर में पुस्तकों के नाम खुलासा लिखने चाहिये।

३—रेलवे स्टेशन नज़दीक हो तो रेल-पार्सल से पुस्तकें मँगाने में किफ़ायत होगी। रेल-द्वारा पुस्तकें मँगानेवालों को रेलवे-स्टेशन का नाम साफ़-साफ़ लिखना चाहिये।

४—रेल-पार्सल से पुस्तकें मँगानेवालों को कम-से-कम दो रुपये पेशगी भेजना चाहिये।

Printed & Published by R. N. Tripathi at the Hindi-Mandir Press; Allahabad.

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पुस्तकों का सूचीपत्र

कविता-कौमुदी

पहला भाग—हिन्दी

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में चंदबरदाई, विद्यापति ठाकुर, कबीरसाहब, रैदास, धर्मदास, गुरु नानक, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, नरोत्तमदास, मीराबाई, हितहरिवंश, नरहरि, हरिदास, नन्ददास, टोडरमल, बीरबल तुलसीदास, बलभद्र मिश्र, दादूदयाल, गंग, हरिनाथ, रहीम, केशवदास, पृथ्वीराज और चम्पादे, उसमान, मलूकदास, प्रवीणराय, मुबारक, रसखान, सेनापति, सुन्दरदास, बिहारीलाल, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम, कुलपति मिश्र, जसवंतसिंह, बनवारी, गोपालचंद मिश्र, बेनी, सुखदेव मिश्र, सबलसिंह चौहान, कालिदास त्रिवेदी, आलम और शेख़, लाल, गुरु गोविन्दसिंह, घनआनन्द, देव, श्रीपति, वृन्द, बैताल, उदयनाथ (कवीन्द्र), नेवाज, रसलीन, घाघ, दास, रसनिधि, नागरीदास और बनीठनीजी, चरनदास, तोष, रघुनाथ, गुमान मिश्र, दूलह, गिरिधर कविराय, सूदन, सीतल, व्रजवासीदास, सहजोबाई, दयाबाई, ठाकुर, बोधा, पद्माकर, लल्लूजी लाल, जयसिंह, रामसहाय दास, ग्वाल, दीनदयाल गिरि, रणधीरसिंह, विश्वनाथसिंह, राय ईश्वरीप्रताप नारायण राय, पजनेस, शिवसिंह सेंगर, रघुराजसिंह, द्विजदेव, रामदयाल नेवटिया, लछमणसिंह, गिरिधरदास, लछिराम और गोविन्द गिल्लाभाई

के जीवन-चरित्रों और उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह है। प्रारम्भ में हिन्दी का एक हज़ार वर्षों का इतिहास बड़ी खोज से लिखा गया है। अन्त में प्रेम, हास्य, श्रृङ्गार और नीति के बड़े ही मनोरंजक घनाक्षरी, सवैया, कवित्त, दोहे, पहेलियाँ, खेती की कहावतें और अन्योक्तियाँ संगृहीत हैं। यह पुस्तक शिक्षित मनुष्य के हाथ, हृदय और वाणी का श्रृङ्गार है। बढ़िया काग़ज़, उत्तम छपाई और स्वर्णाक्षरों से अंकित, रंगीन कपड़े की मनोहर जिल्द से सुसज्जित यह पुस्तक सुन्दर हाथों में सर्वथा स्थान पाने योग्य है। दाम ३)। डाक-व्यय ।॥=)।

सम्मतियाँ

(१)

आपनार संकलित "कविता-कौमुदी" ग्रन्थखानि पाठ करिया परितृप्ति लाभ करियाछि। हिन्दी-कवितार ए रूप सुन्दर एवं धारावाहिक संग्रह आमि आर कोथाओ देखा नाई। आपनी एई कवितागुलि प्रकाश करिया भारतीय साहित्यानुरागी व्यक्तिमात्र केइ चिरकृतज्ञता पाशे आबद्ध करियाछेन। इति, १६ आषाढ़, १३२६।

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

(२)

Ruthfarnham, Camberley (England)

Surrey, 19-9-19

I have read the book with much interest, and it is a valuable introduction to the study of Hindi literature. I wish such a book had been available when I began my studies in that language fifty years ago.

George A. Grierson.

(३)

महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा—

.........of your Kavita-Kaumudi—I am an old admirer and you will be glad to learn that each of my boys have got a copy of this book. It is an excellent compilation done with good taste and wise discrimination. The introduction is instructive and highly suggestive.

(४)

Hohenzollerndomm
Berlin—Wilmersdorf
Germany.

Dear Panditji,

I have been using your handy volumes of Kavita-Kaumudi for the last three years regularly. It is nothing but the truth when, I say that your volumes contain selections of sterling worth. They present the best and most interesting productions of Indian poetry in a nut-shell, as it were to us your introductions on Hindi and Urdu literatures and on Gram-Git are the most excellent essays on the subject that I know of. They ought to be published separately also in English for the use of the whole of India and other countries as well.

Yours Sincerely
Tarachand Roy.
(हिन्दी के प्रोफेसर)

कविता-कौमुदी

दूसरा भाग—हिन्दी

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें नीचे लिखे कवियों की जीवनियों और उनकी चुनी हुई कविताओं का संग्रह है—

हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी, विनायकराव, प्रतापनारायण मिश्र, विजयानन्द त्रिपाठी, अम्बिकादत्त व्यास, लाला सीताराम, नाथूराम शंकर शर्मा, जगन्नाथ प्रसाद "भानु", श्रीधर पाठक, सुधाकर द्विवेदी, शिवसम्पति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, अयोध्यासिंह उपाध्याय, राधाकृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त, किशोरीलाल गोस्वामी, लाला भगवानदीन, जगन्नाथदास (रत्नाकर), राय देवीप्रसाद "पूर्ण", कन्हैयालाल पोद्दार, रामचरित उपाध्याय, सैयद अमीर अली "मीर", जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, कामताप्रसाद गुरु, मिश्रबन्धु, गिरिधर शर्मा, रामदास गौड़, माधव शुक्ल, गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही", रूपनारायण पांडेय, रामचन्द्र शुक्ल, सत्यनारायण, मन्नन द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, लोचनप्रसाद पांडेय, लक्ष्मीधर वाजपेयी, शिवाधार पांडेय, माखनलाल चतुर्वेदी, जयशङ्करप्रसाद, गोपालशरण सिंह, बदरीनाथ भट्ट, सियारामशरण गुप्त, मुकुटधर, वियोगी हरि, गोविन्ददास, सूर्यकान्त त्रिपाठी, सुमित्रानन्दन पन्त, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारीसिंह 'दिनकर', इत्यादि।

प्रारम्भ में खड़ी-बोली की कविता का बड़ा मनोरंजक इतिहास और अन्त में "कौमुदी-कुञ्ज" नाम से फुटकर कविताओं का बड़ा अनूठा संग्रह है। इसका नया संस्करण बड़ी सजधज से निकला है। बढ़िया सफेद चिकना काग़ज़, अच्छी छपाई, कपड़े की सुन्दर और मज़बूत जिल्द और दाम सिर्फ तीन रुपये। डाक-व्यय ।।।=)

कविता-कौमुदी

तीसरा भाग—संस्कृत

(नवीन संस्करण)

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें निम्नलिखित संस्कृत-कवियों की जीवनियाँ और उनकी चमत्कार-पूर्ण कविताएँ संगृहीत हैं:—

अग्नि, वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, चाणक्य, भरत, भास, भर्तृहरि, गुणाढ्य, कालिदास, विष्णुशर्मा, कुमारदास, अमरसिंह, शूद्रक, अश्वघोष, भामह, भारवि, भर्तृमेण्ठ, दण्डी, सुबंधु, भट्टि, माघ, भौमक भट्ट, मयूर, अमरुक, बाणभट्ट, हर्षवर्द्धन, भट्टनारायण, दामोदर गुप्त, शंकराचार्य, भवभूति, वामन, रत्नाकर, आनन्दवर्धनाचार्य, मुरारि, विशाखदत्त, राजशेखर, रुद्रट, हलायुध, परिमल, नारायण, अमितगति, त्रिविक्रम, सोमदेव, भोजराज, क्षेमेन्द्र, बिल्हण, लोलिम्बराज, हेमचन्द्र, कृष्ण मिश्र, दामोदर मिश्र, मम्मट, वाग्भट, धनञ्जय, मंखक, वासुदेव, कविराज, जयदेव, कल्हण, गोवर्द्धन, श्रीहर्ष, जल्हण, रामचन्द्र, वत्सराज, राजानक रुय्यक, जगद्धर, जयदेव, मल्लिनाथ, शार्ङ्गधर, माधवाचार्य, विश्वनाथ, राजशेखर, विद्यापति, वामन भट्ट बाण, बल्लाल, अप्पय दीक्षित, जगन्नाथ पंडितराज, रामावतार शर्मा.

प्रारम्भ में संस्कृत-साहित्य का रोचक इतिहास है। अन्त में कौमुदी-कुञ्ज है, जिसमें अकाल जलद, अभिनव गुप्ताचार्य, अमितगति, अमोघ-वर्ष, कविपुत्र, कविराज, चन्दक, जोनराव, पाजक, पद्मगुप्त, प्रकाशवर्ष, विकटनितम्बा, भट्टभल्लट, भिक्षाटन, मातङ्गदिवाकर, मातृगुप्त, मोरिक, लीलाशुक, वररुचि, वासुदेव, विज्जका, विद्यारण्य, शिवस्वामी, शीला भट्टारिका, हर्षदेव आदि चमत्कारी कवियों के रस, ऋतु, पहेली, नायिका-भेद, नखशिख तथा निन्दा-स्तुति-विषयक श्लोकों का बड़ा ललित और आनन्दवर्द्धक संग्रह है। छपाई-सफ़ाई सुन्दर; सुवर्णाङ्कित रंगीन जिल्द; मूल्य तीन रुपये; डाक-व्यय ॥।=)।

कविता-कौमुदी

चौथा भाग—उर्दू

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी-अक्षरों में उर्दू के वली, आबरू, मज़मून, नाज़ी, यकरङ्ग, हातिम, आरज़ू, फ़ुग़ाँ, मज़हर, सौदा, मीर, दर्द, सोज़, जुरअत, हसन, इन्शा, मसहफ़ी, नज़ीर, नासिख, आतिश, ज़ौक, ग़ालिब, रिन्द, मोमिन, अनीस, दबीर, नसीम, अमीर, दाग़, आसी, हाली, अकबर, चकबस्त और इक़बाल आदि मशहूर शायरों की दिल को हुलसानेवाली, तबीयत को फड़कानेवाली, कलेजे में गुदगुदी पैदा करनेवाली, आशिक़-माशूक़ के चोचलों से चुहचुहाती हुई, महावरों की मौज में चुलबुलाती हुई, बारीक विचारों की मिठास से दिमाग़ को मस्त करनेवाली, निहायत शोख़, बातों ही से हँसाने और रुलानेवाली उर्दू-ग़ज़लों और तीर की तरह चुभनेवाले शेरों का अनोखा संग्रह है।

इसमें प्रारम्भ में उर्दू-भाषा का निहायत दिलचस्प इतिहास भी है। कौमुदी-कुञ्ज में अन्य शायरों के निहायत मज़ेदार शेरों और ग़ज़लों का अनूठा संग्रह है।

छपाई-सफ़ाई मनोहर; काग़ज़ बढ़िया; कपड़े की सुवर्णाङ्कित जिल्द; दाम केवल तीन रुपये। डाक-व्यय ।।।=)

सम्मतियाँ

(१)

डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर—

The 4th part ot 'Kavita-Kaumudi' is a valuable contribution to Urdu literature and which will serve to arouse enthusiasm for a critical study of Urdu poets. The book has been presented to our library where it will be studied with profit by our scholars.

(२)

डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, एम० ए०, डी० लिट्०, (लंडन)

प्राफ़ेसर कलकत्ता युनिवर्सिटी

Tripathiji,

I wish to write to you and make your acquaintance after having read your most admirable and illumining introduction in the 4th volume of the 'Kavita-Kaumudi. Your account of the characteristic and general spirit of Urdu poetry is one of the rarest pieces of literary study that I have seen on any Indian language, and if I had the time, I would gladly have translated it into English ; it deserves to be widely read.

सम्मतियाँ

(१)

माननीय पंडित मदनमोहन मालवीय—

श्रीः

प्रिय त्रिपाठी जी,

'ग्राम-गीत' संग्रह का जो भाग आपने मुझे दिखाया है, उसको देखकर मुझको अनिर्वचनीय सुख प्राप्त हुआ है। इसमें अनेक गीतों में बहुत रस बहुत मिठास और मन पर चोट करने वाले भाव बड़ी सरल भाषा में भरे हुये [redacted] हैं। जो लोग कविता के हृदय के पहिचानने वाले हैं और जिनको हमारे गावों में बसने वाले सीधे और भोले भाई और बहिनों के जीवन का ज्ञान है, वे इस संग्रह में उनके सुख-दुख, मान-अपमान, उनके मन की कामना और धर्म के भाव के उद्गार में बहुत रस पावेंगे। इन गीतों के संग्रह का आपका परिश्रम अति प्रसंशनीय है। इस परिश्रम से आपने हिन्दी जगत को सदा के लिये उपकृत किया है। मुझे निश्चय है कि कविता के प्रेमी आपके इस संग्रह का प्रेम से स्वागत करेंगे।

काशी
भा॰ कृ॰ ६ सं॰ १९८६ वि॰

मदन मोहन मालवीय।

भाई रायकृष्णदासजी,

आपके [illegible] गीतों के संग्रह का जो कुछ परिचय मैंने [illegible] आपके परिचय का [illegible] का कुछ लाभ हुआ ऐसा मानता हूं. संग्रह उत्तम लगा. मैं तो चाहता हूं प्रत्येक हिंदी भाषा प्रेमी आपके संग्रह का अध्ययन करे. पुस्तक विद्यालयों में स्थान लेने लायक मानता हूं. आपने गीतों का अनुवाद दिया है उससे पुस्तक की उपयोगिता अधिक हुई है. आपके प्रयत्नके लिये धन्यवाद

[illegible]
२८ १० [illegible]

आपका
मोहनदास गांधी

(३)

पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी—

आपने साहित्य के इस अछूते अंश की पूर्ति करके बड़ा काम किया। बड़ी अच्छी पुस्तक लिखी। पुस्तक के आरम्भ के कई सौ पृष्ठ तो अनमोल ही हैं। उनमें विषय की विवेचना और आपके साहित्य-ज्ञान की राशियाँ भरी मिलीं।

(४)

डाक्टर भगवानदास—

नमस्कार।

अनेक धन्यवाद। ग्राम-गीत की पुस्तक मिली। जबतक आँखों में और हृदय में भी अधिक व्यथा नहीं आरम्भ हुई, तबतक पढ़ता रहा। हृदय दुर्बल हो जाने से सचमुच बहुत करुणा की कविता पढ़ने-सुनने से रस उठने के स्थान में व्यथा ही अब होने लगती है। नैषध का श्लोक याद आता है—

पिकाद्वने शृण्वति भृङ्गहुंकृतै-
र्दशामुदञ्चत्करुणां वियोगिनाम्।
अनास्थया सूनकरप्रसारिणीं
ददर्शदूनः स्थलपद्मिनीं नलः॥

आपका परिश्रम और सदुत्साह सफल हो। और देश में मिथ्या शाब्दिक चतुरता और नटबाजी और कृत्रिम अलङ्कार की भरमार कम हो और गंभीर भाव और रस का उद्बोधन हो।

पिबत भागवतं रसमालयम्
मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः
—न तु आलङ्कारिकाः—

गीतों में मुझे, तो रस की मात्रा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति से भी—तथा तुलसीदास, सूरदास से भी, अधिक जान पड़ी। मुझे तो संस्कृत में ऐसा रस नहीं आता।

भगवानदास

(५)

लाला लाजपतराय (स्व०)

My Dear Tripathiji,

I am realy happy to hear that you are making a collection of Folke-lore-songs of the provinces of Northern India. I congratulate on your enterprise, because the real history of the country and its moral and social ideals are so much locked up in these Folk-lores that their loss will be a real disaster. We are losing every thing valuable in our Folk-lore traditions, and any body who restores them to life again and makes them available to the educated people would do a lasting service to the country and also to the Hiudu culture. I hope, therefore, that patriotic Indians whether educated or uneducated will help you in this work. I wish you success from the bottom of my heart.

(६)

माननीय सर सीताराम साहब—

(प्रेसीडेंट लेजिस्लेटिव कौंसिल, युक्तप्रान्त)

नैनीताल, २३-६-२६

श्रीयुत त्रिपाठीजी,

प्रणाम। ग्राम-गीत के लिये धन्यवाद तथा बधाई। ग्राम-गीतों का संग्रह कर आपने बड़ा उपकार किया है। इनसे हमारी सभ्यता, आदर्श

तथा जीवन-प्रणाली का पता भली भाँति लगता है। खेद तो यह है कि आये दिन इनका अभाव होता जा रहा है। यदि इसी प्रकार साहित्य की मर्म-दृष्टि से देखकर आप हमारे पश्चिमी प्रांत के गीतों को पुस्तकाकार में प्रकाशित कर सकें, तो अच्छा हो।

मैं तो यह चाहता हूँ कि साहित्य के अतिरिक्त हमारी लोकोक्तियों में जो परोपकारी लाभदायक अन्य अनेक बातें हैं, उनका भी संग्रह आवश्यक है। जैसे, दवायों के चुटकुले। अन्यथा नवजीवन के प्रवाह में अथवा जीवन-संघर्ष में पुराने साहित्य के साथ इन सब बातों का भी सर्वनाश हो जावेगा। अब भी प्रायः लोप होगया है। आपका उद्यम और परिश्रम सराहनीय है।

(७)

कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सेक्रेटरी का पत्र—

Dear Mr. Tripathi,

Dr. Rabindranath Tagore is very glad to know that you have been taking great pains in collecting rural songs from different parts of India. He sends his blessings and wishes you every success. He hopes your book will find appreciative readers and help to spread the love of folk-literature among our country-men.

(८)

प्रो० नलिनीमोहन सान्याल, एम० ए०, भाषातत्व-रत्न—

ग्राम-गीतों का संग्रह, सङ्कलन और प्रचार आपके अद्‌भुत आत्म-त्याग का परिचायक है। पुस्तक की भूमिका सुचिन्तित और सुलिखित है।

(९)

बाबू रामानन्द चटर्जी, (माडर्न रिव्यू के सम्पादक—)

Dear Mr. Tripathi,

Your efforts to collect and publish folk-songs are highly praiseworthy. Your collection is sure to be useful and valuable. The work deserves every support and encouragement.

Yours sincerely
Ramanand Chatterji

(१०)

महामहोपाध्याय डा० गङ्गानाथ झा,
(भू० वाइस चांसलर, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी)—

Dear Tripathiji,

Many thanks for the fifth part of Kavita-Kaumudi, which fully maintains the standard of the previous parts; indeed from point of view of interest it surpasses them all. I wish you got some one to collect such songs from Mithila, where our women have a large stock of songs which may be regarded to be as नित्य and अपौरुषेय as the Veda itself.

I shall keep your collection always by me : an occasional dip into it will be so inspiring and ennobling with many thanks.

Yours sincerely
Ganganath Jha

(११)

बाबू राजेन्द्रप्रसाद—

यदि कविता का गुण है हृदय को बेंचना—उस पर चोट करना, तो ग्राम-गीत इस भाव से ओत-प्रोत हैं। आपका परिश्रम बहुत ही सफल हुआ है। और मैं समझता हूँ, हिन्दी-संसार आपके परिश्रम की क़दर करेगा।

(१२)

मंत्री, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी—

आपकी "कविता-कौमुदी" का पाँचवाँ भाग सभा के गत अधिवेशन में उपस्थित किया गया था। यह भाग बहुत ही उत्तम निकला है और इसके लिये सभा आपको बधाई देती है।

(१३)

पंडित रामनारायण मिश्र (काशी)—

ग्राम-गीतों का संग्रह कर आपने मातृ-भाषा की सच्ची सेवा की है। स्वर्गवासी पं० सुधाकर द्विवेदीजी ने ऐसा संग्रह छपवाने की कई बार इच्छा प्रकट की थी। पर उनके जीते-जी यह काम न हुआ। यदि वे आज होते, तो आपको सच्चे हृदय से आशीर्वाद देते।

आपकी पुस्तक पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

(१४)

मिस्टर ए० जी० शेरिफ़, I. C. S.—

I Congratulate you on the fifth volume. You have done a great service to literature in collecting and preserving this store of genuine folk-songs. It seems to me to be a work in the same class with Percy's *Reliques* of Ancient Euglish Poetry. Percy's *Reli-*

ques (as you know) was largely responsible for the romantic revival in English Literature at the end of the eighteenth century. Let us hope that your ग्राम-गीत will have a similar influence. The few ballads that I have read in the last two days have the ring of the poetry and your commentary justly illustrates this. A study of these ballads will probably guide poets of the present generation to a fresh and living source of natural expression.

(१५)

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

आपकी मौलिक रचनायें ही आपको अमर बनाने के लिए यथेष्ट हैं; परन्तु आप और कुछ न करके यदि एक यही काम करते, तो भी अक्षय यश के अधिकारी थे।

कुछ गीत, तो इतने कारुणिक हैं कि आँसू नहीं रुकते। न जाने, ऐसा कितना साहित्य होगा! भगवान् आपका भला करे, आपका ध्यान इस ओर गया है। नये मन्दिर निर्माण कराने की अपेक्षा पुरानों का जीर्णोद्धार करना बड़े त्याग और पुण्य का काम है; किन्तु इसके लिये बड़े मनोबल की आवश्यकता है। आप भाग्यवान हैं कि आपमें वह बल है।

(१६)

प्रो० अमरनाथ झा, एम० ए०—

हिन्दी का आपने इस संग्रह के प्रकाश करने से बड़ा उपकार किया है। आपके परिश्रम और उत्साह की मैं क्या प्रशंसा करूँ? यदि

आप स्वयं सुकवि न होते, तो केवल 'कविता-कौमुदी' के पाँच भाग का सङ्कलन ही इस योग्य था कि हिन्दी-साहित्य में आपको आदरणीय स्थान दिलावे।

इन गीतों के पढ़ने पर कवियों के पद कैसे नीरस मालूम होते हैं। न इनमें अनुप्रास है, न अलङ्कार की खोज है, न शब्द-विन्यास है। हृदय की उमङ्ग है, स्वाभाविक भाव है, नित्य की भाषा है और सीधे हृदय पर प्रभाव पड़ता है। सोचना नहीं पड़ता। प्रभाव पड़ने पर विचारते हैं, 'प्रभाव क्यों पड़ा? इस पद में क्या विशेषता है?' विचार करें, गानेवाला तो प्रभाव डालकर अपना काम कर गया।

"जैसे कुम्हार क आँवाँ त भभकि-भभकि रहै।
बेटा, वैसइ माई क करेजवा त धधकि-धधकि रहै॥"

"आधे तलवा माँ हंस चूनैं आधे माँ हंसिनि।
तबहूँ न तलवा सोहावन एक रे कमल बिन॥
आधी फुलवरिया गुलबवा आधी माँ केवड़ा गमकइ।
तबहूँ न फुलवा सुहावन एक रे भँवर बिन॥"

"जो मैं होतिउँ बन कइ कोइलिया, बनै रे बन रहतिउँ हो ना।
मोरा हरि जाते अहेरिया, तौ सबद सुनौतिउँ हो ना"॥

बड़ा आनन्द होता इन्हें पढ़ने पर, और शोक भी होता है कि अपनी इतनी अनमोल सम्पत्ति को हम लुप्त होने दे रहे हैं। आशा है, आपके प्रयत्न से यह स्थायी-स्वरूप में साहित्य का अङ्ग होगा।

(१७)

डा० बाबूराम सक्सेना—

ग्राम-गीतों के संग्रह में जो अदम्य उत्साह आप दिखा रहे हैं, उसके लिये आप प्रशंसा के पात्र हैं। आपके इस काम का मूल्य भविष्य में मालूम होगा जब इन गीतों का प्रायः लोप ही हो जायगा।

(१८)

प्रो० ताराचन्दराय (बर्लिन युनिवर्सिटी, जर्मनी)—

You have rendered a signal service to the cause of Indian rural poetry through the publication of your most valuable and interesting collection. You deserve the deepest gratitude of all Hindi scholars for the excellent introduction to the fifth volume of your 'Kavita-Kaumudi.'

(१९)

सन्तराम, बी० ए०, (लाहौर)—

ग्राम-गीतों का ऐसा सुन्दर संग्रह तैयार करके आपने एक बहुत ही पुण्य कार्य किया है। कोई-कोई गीत तो इतना मर्मस्पर्शी है कि पढ़ते-पढ़ते आत्मा बाह्य जगत को भूल-सा जाता है। मालूम नहीं, वर्तमान पीढ़ी आपके परिश्रम की कद्र कर सकेगी या नहीं; परन्तु एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा जब जनता आपके इस भगीरथ-प्रयत्न की दाद देगी।

कविता-कौमुदी

छठा भाग—ग्राम-गीत

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

इस भाग में निम्नलिखित विषय हैं—

आल्हा, लोरिक, हीर-राँझा, ढोला-मारू, नयकवा आदि बड़े-बड़े गीतों की संक्षिप्त कथाएँ और नमूने; घाघ और भड्डरी की उक्तियाँ; खेती की कहावतें; पहेलियाँ; लोकोक्तियाँ; नीति के पद्य; काश्मीरी गीत; पंजाबी गीत; मारवाड़ी गीत; भीलों के गीत; गुजराती गीत; मराठी

गीत, मलयाली गीत; तमिल गीत; तेलगू गीत; उड़िया गीत; बँगला गीत; आसामी गीत; मैथिल गीत; नेपाली गीत और पहाड़ी गीत।

कौमुदी-कुञ्ज में—बिरहे, कहरवा, पचरा, लावनी, होली, रसिया, चैती, खेमटा, पूरबी, दादरा, दोहे, सोरठे, सवैया, कबित्त, छन्द, भजन, इत्यादि।

छपाई-सफ़ाई बहुत उम्दा; कागज़ बढ़िया; जिल्द सुन्दर; दाम ३); डाक-व्यय ।।।≈); पुस्तक प्रेस में है।

कविता-कौमुदी

सातवाँ भाग—बँगला

सम्पादक—डा० कृपानाथ मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०

इसमें प्रारंभ में बँगला-साहित्य का प्रारंभ से लेकर आजतक का इतिहास दिया गया है। फिर निम्नलिखित कवियों के परिचय और उनकी चुनी हुई कविताएँ दी गई हैं। अन्त में कौमुदी-कुञ्ज है, जिसमें फुटकर कविताओं का संग्रह है। मूल कविताएँ देवनागरी अक्षरों में दी गई हैं और नीचे उनके हिन्दी-अनुवाद दिये गये हैं।

कवि-नामावली

डाक, खना, रामाइ पण्डित, नारायणदेव, विजयगुप्त, केतकादास क्षेमानन्द, कविकङ्कण मुकुन्दराम, भवानीशङ्करदास, कृत्तिवास, घनश्यामदास, सञ्जय काशीरामदास, नित्यानन्द, मालाधर बसु, चण्डीदास, विद्यापति, गोविन्ददास, ज्ञानदास, भारतचन्द्र, रामप्रसाद, माइकेल मधुसूदनदत्त, हेमचन्द्र वन्द्योपाध्याय, नवीनचन्द्र सेन, द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, द्विजेन्द्रलाल राय, चित्तरञ्जनदास, रजनीकान्त सेन, सत्येन्द्रनाथ दत्त, अक्षयकुमार वड़ाल, मोहितलाल मजुमदार, यतीन्द्रमोहन बागची, कामिनी राय, कालिदास राय, कृष्णधन दे, प्रियम्वदा देवी, दिलीपकुमार राय, काज़ी नज़रुल इसलाम।

अंत में कौमुदी-कुञ्ज है, जिसमें ४० कवियों की फुटकर कविताओं का संग्रह है। इसमें भी मूल कवितायें देवनागरी अक्षरों में दी गई हैं और नीचे उनके हिन्दी-अनुवाद दिये गये हैं।

छपाई-सफ़ाई बहुत उम्दा; काग़ज़ बढ़िया; जिल्द सुन्दर; दाम ३) डाक-व्यय ।।।=)।

सम्मतियाँ

(१)

Roy's Weekly (Delhi)—

Pandit Ram Naresh Tripathi has put Hindi literature undar a debt of gratitude by bringing out the series of which the present one is the seventh; It deals with the poetry of Bengali literature, and the work has been compiled by a well-known Bengali-Hindi writer Mr. Kripa Nath Misra. As has been done with the other volumes of this series, a history of the time and the literature of the poets has been delt with properly, the lives of the poets have been incorporated along with a selection of some of their famous lines with their Hindi translations. This book will be welcomed by readers in Hindi on account of the fact that Hindi has learnt and adopted a lot from the Bengali literature which is so beautiful and so rich. The book is well printed and the get up is quite in keeping with the books of this series.

पथिक

(खंड काव्य)

रचयिता—रामनरेश त्रिपाठी

पथिक एक खण्ड-काव्य है। पाँच सर्गों में समाप्त हुआ है। पथिक की कथा पढ़कर कौन ऐसा सहृदय है, जो न रो उठे। स्थान-स्थान पर प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ा ही हृदय-स्पर्शी वर्णन है। देश की दशा, कर्तव्य-पालन की दृढ़ता, आत्मबल की महिमा और आत्मत्याग की कथा बड़े ही मार्मिक शब्दों में लिखी गई है। इसके सम्बन्ध की सबसे महत्व-पूर्ण बात यह है कि इसे महात्मा गाँधी ने आद्योपान्त पढ़ा है। मराठी में तथा दक्षिण भारत की अन्य कई भाषाओं में इसके पद्यानुवाद हो चुके हैं और बर्लिन यूनिवर्सिटी (जर्मनी) में यह पढ़ाया भी जाता है। इसमें एक तिरंगा और चार सादे चित्र भी हैं।

पुस्तक बढ़िया काग़ज़ पर बड़ी सुन्दरता से छपी है। दाम आठ आने। डाक-व्यय ॥)

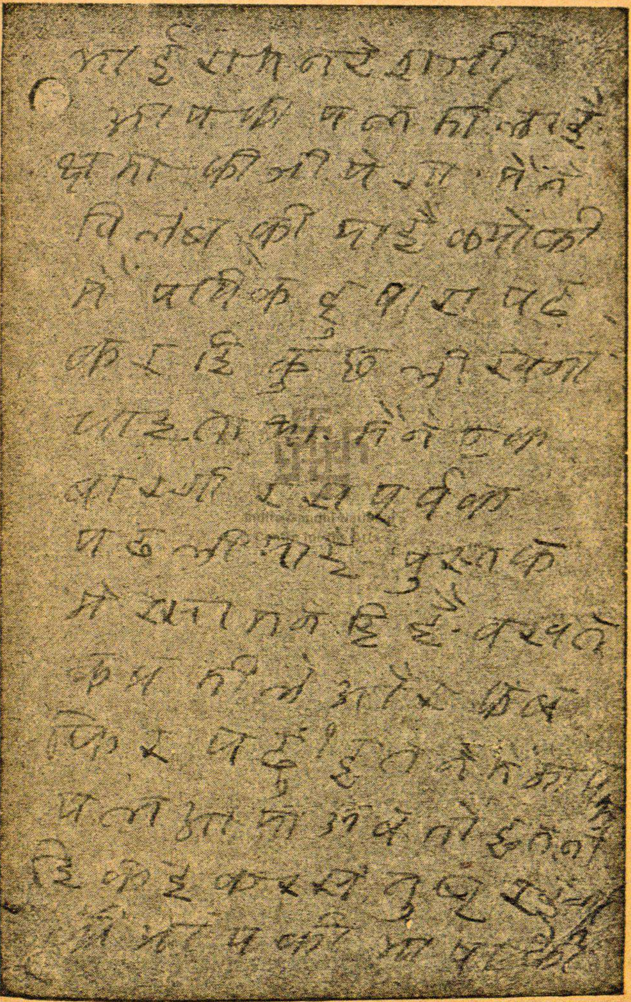
सम्मतियाँ

(१)

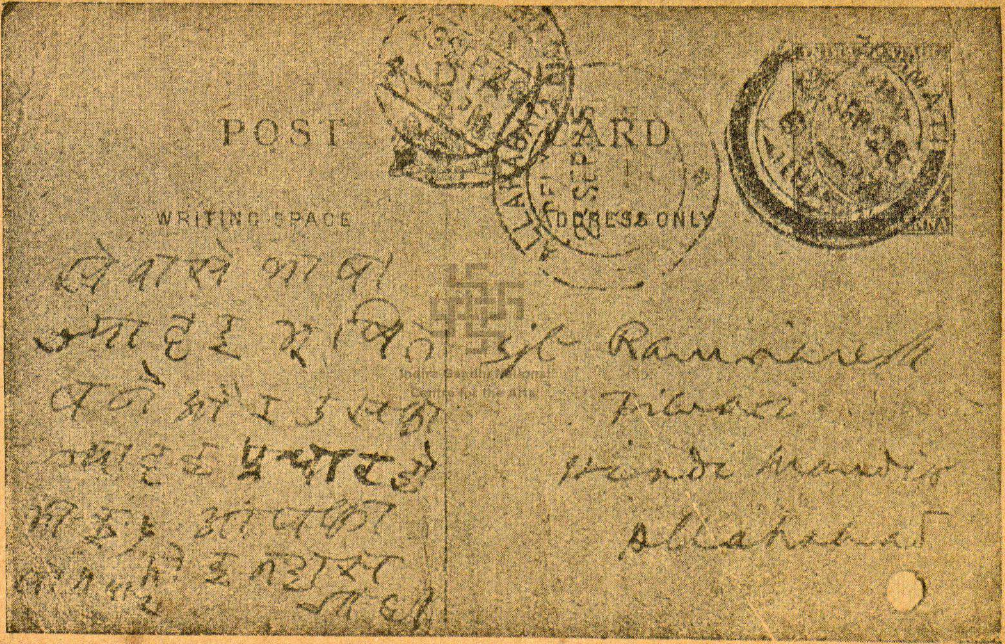
पंडित मदनमोहन मालवीयजी—

पथिक की रचना बहुत ही सुन्दर और प्रभावोत्पादक है। पथिक का चरित्र बड़ी उत्तमता से लिखा गया है। इस पुस्तक का पहला संस्करण एक लाख प्रतियों का होना चाहिये।

(२)



[२२]


POST CARD
WRITING SPACE
ADDRESS ONLY
Sjt Ramnaresh
Tripathi
Hindi Mandir
Allahabad

(३)

पंडित श्रीधर पाठक (स्व०)—

पथिक सर्वांशतः एक सत्काव्य है और हमारी मातृभाषा को उस उच्च पद पर प्रतिष्ठापित करता है, जिस पर उसके सच्चे प्रेमी उसे देखने को बहुत दिनों से अधीर हो रहे थे।

(४)

पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय—

पथिक एक मौलिक काव्य है। इसमें भाव और माधुर्य का मणि-काञ्चन-योग है। कवि-सहृदयता का इसमें सरस विकास है। सरसता-स्रोत जहाँ देखिये, वहीं प्रवाहित है।

(५)

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

इस कालीन सिद्ध कविवर ने पावन पथिक कहानी।
उज्ज्वल गीतों में रच की है कीर्तिमयी निज बानी॥

(६)

लाला भगवानदीन—

पथिक को सिर से पैर तक देखा। रंग चोखा और ढंग अनोखा है। भाषा नुकीली और वर्णन-शैली बड़ी चुटीली है।

(७)

पंडित लोचनप्रसाद पांडेय—

पथिक ने दर्शन दिये पवित्र, हुये हम पावन तथा कृतार्थ।
मधुर मोहक उपदेश ललाम, श्रवणकर जाग उठा परमार्थ॥
धन्य कविवर! तव प्रतिभा दिव्य, धन्य भावुकता भाषा-भक्ति।
धन्य यह देशोद्धार-उपाय, धन्य रामेश्वर-दर्शन-शक्ति॥

(८)

पंडित नाथूराम शङ्कर शर्मा (स्व०)—

शङ्कर पथिक प्रतापी माना, भाव रुचिर रचना का जाना।
पाय प्रकाश ज्ञान-सविता का, फूला हृदय-पद्म कविता का॥

(९)

पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी—

वर्णन सुन्दर और स्वाभाविक है। कल्पना और रचना बड़ी ही रोचक है।

(१०)

बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन—

मुझे निश्चय है कि त्रिपाठीजी के इस काव्य को हिन्दी-भाषा में आदरणीय स्थान मिलेगा और हिन्दी के उच्चकोटि के काव्यों में इसकी गणना होगी।

(११)

पंडित कृष्णाकान्त मालवीय—

काव्य में जितने गुण होने चाहियें, वह प्रायः सब "पथिक" में मौजूद हैं। यह हमारे हृदय में उच्च भावों को भरता है, हमारे मानस शरीर को यह उच्च भावों की चोटी पर ले बैठाता है; साथ ही हमारी आत्मा को यह पवित्रतर कर विश्वात्मा में विलीन कर देता है।

(१२)

सेठ गोविन्ददास—

पथिक और मिलन मैंने पढ़ लिये। सुन्दर रचना है और बड़े अच्छे-अच्छे भाव हैं। कोई-कोई स्थल तो ऐसे हैं कि जिन्हें पढ़कर ऐसा कोई सहृदय नहीं, जिसकी आँखों से आँसू न बह पड़ें।

मिलन मुझे बहुत अधिक पसन्द आया।

(१३)

डा० भगवानदास, एम० ए०—

मैंने "पथिक" काव्य आद्योपांत अक्षरशः पढ़ा और कई अंश दो बार पढ़ा। खड़ी-बोली की कविता की ओर मेरी रुचि पहले कम थी। पर इसको पढ़कर मुझे निश्चय हो गया कि खड़ी-बोली में भी कविता के सब उत्तम गुण रक्खे जा सकते हैं।

सुबोध्यता और प्रसाद-गुण, करुण, वीर और शान्त-रस, सात्विक प्रेम, देश-भक्ति, वैराग्य, परार्थ-बुद्धि, आत्म-त्याग, दुष्ट-नीति पर क्षमा की जीत यह सब बहुत अच्छे प्रकार से दिखाया है। कथा का रूपक भी बहुत सुन्दर, अपूर्व और इस देश की अवस्था के अनुरूप बाँधा है। प्रकृति की शोभा का वर्णन भी स्थान-स्थान पर बहुत ललित और कोमल शब्दों में किया है। मुझे आशा है, यह काव्य चिरस्थायी होगा।

(१४)

बाबू शिवप्रसाद गुप्त—

मैं पथिक का एक-एक अक्षर पढ़ गया। जैसे-जैसे मैं इसे पढ़ता जाता था, मुग्ध होता जाता था। ईश्वर आपकी लेखनी में और भी बल दे, और भगवान् करे आपकी पुस्तक भविष्यवाणी की जगह ले।

(१५)

सेठ जमनालाल बजाज—

गत बीमारी में पथिक के पढ़ने से मुझे बहुत धैर्य मिला। मैंने पथिक को दो बार पढ़ा है। मेरी राय में प्रत्येक नवयुवक को, जो जीवन को आदर्श बनाना चाहता है, पथिक से बहुत लाभ होना संभव है।

(१६)

Prabuddha Bharata (MAYAVATI)—

This is a patriotic tale in fine cantos, written in delightful verse (Khari boli), which strikes a deep note of pathos combined with a genuine love of nature and for one's own country.

November, 1921

(१७)

Leader—

This is a patriotic story written in beautiful Hindi verse, and from a literary point of view can claim a high place.

(१८)

किरात (मराठी के सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार और पथिक के पद्यानुवादक)—

पथिक लिखकर रामनरेश त्रिपाठी ने जो गौरव प्राप्त किया है, इस प्रकार का यश आजतक आधुनिक महाराष्ट्र कवियों के बाँटे आने का एक भी उदाहरण हमारे नेत्रों के सन्मुख नहीं है।

(१९)

प्रो० ताराचन्द्रराय (बर्लिन युनिवर्सिटी, जर्मनी)—

You will be very glad to learn that I have been lecturing on and explaining selections from your Pathik to my students in the University. They enjoy them and learn them by heart.

मिलन

(खंड काव्य)

रचयिता—रामनरेश त्रिपाठी

यह एक खण्ड-काव्य है। पाँच सर्गों में समाप्त हुआ है। पथिक और मिलन दोनों दो सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर लिखे गये हैं। साहित्य-रसिक लोग इसकी कथा को पथिक से उत्तम बताते हैं। दक्षिण भारत में इसका बड़ा प्रचार है और वहाँ की प्रायः सब भाषाओं में इसके पद्यानुवाद हो चुके हैं। नया संस्करण बहुत सुन्दर निकला है। मूल्य आठ आने। डाक-व्यय ॥)

सम्मतियाँ

(१)

Prabuddha Bharata—

It is a nice love-story. Pandit Tripathi Wields a graceful pen and this has made this tiny booklet a success.

(२)

Leader—

A simple story of the love and patriotism written in beautiful Hindi verse, and from a literary point of view can claim a high place.

स्वप्न

(खण्ड काव्य)

रचयिता—रामनरेश त्रिपाठी

यह काव्य भू-स्वर्ग काश्मीर में लिखा गया है। जिन्होंने मिलन और पथिक पढ़ा है, वे इस काव्य को अवश्य पढ़ें। इसमें प्रकृति-वर्णन के साथ श्रृङ्गार, विरह, प्रेम और देशभक्ति का अनुपम मिश्रण है। हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने इसे अपने समय का सर्वश्रेष्ठ काव्य मानकर रचयिता को ५००) का पुरस्कार प्रदान किया है।

छपाई-सफ़ाई उत्तम। मूल्य आठ आने। डाक-व्यय ॥)

सम्मतियाँ

(१)

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

कवित्व और काश्मीर, फिर क्या कहना है! बधाई।

(२)

प्रो० अमरनाथ झा—

आपकी कविता का प्रधान गुण उसकी स्वाभाविकता है, और इस दुर्लभ गुण के 'स्वप्न' में भी अनेक उदाहरण हैं। काव्य की और विशेषतायें गौण हैं अनुप्रास, अलंकार, शब्द-विन्यास; प्रधान गुण स्वाभाविकता ही है। इस अंश में आपकी रचनायें सदैव उच्चकोटि की हैं।

(३)

पंडित लोचनप्रसाद पाण्डेय—

स्वप्न की रचना भाव, भाषा एवं छन्द की दृष्टि से नवीनता-पूरित है। मैंने उसे बड़े प्रेम से पढ़ा।

'सदा दूसरों के सुख दुख की,
निष्फल चर्चा में रत रहकर।
कवि का-सा कुत्सित जीवन मैं
क्यों व्यतीत करता हे ईश्वर!'
कवि! तेरे इस मर्म-कथन में,
तेरे इस सकरुण रोदन में।
भरा हुआ है तत्त्व स्वप्न का,
व्यथित विश्व के उद्बोधन में॥

(४)

बाबू श्यामसुन्दरदास—

त्रिपाठीजी की कविता का क्या कहना है! पथिक ने लोगों को मुग्ध किया था, यह भी वैसा ही आदर पावेगा।

(५)

राय कृष्णदास—

काश्मीर के रंगमंच पर अभिनीत रूपक क्यों न सुन्दर हो! तिसपर भी यदि कथा-वस्तु देश-प्रेम से ओतप्रोत हो। उत्तम रचना है। बधाई।

(६)

अवधवासी लाला सीताराम—

स्वप्न काव्य पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। आजकल ऐसे ही काव्यों की आवश्यकता है। भारत का कल्याण जब ही होगा जब स्त्रियों में भी वीर-भाव आजायगा। आपका प्रकृति-वर्णन प्रशंसनीय है।

(७)

पंडित तारादत्त गैरोला, एम० ए०—

स्वप्न पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। स्वप्न अपने ढंग का निराला है।

प्रकृति-वर्णन अति सुन्दर है। मैंने सम्पूर्ण काव्य को श्रीगङ्गाजी के तट पर, अपनी कुटी में बैठकर, बड़े आनन्द से, आद्योपान्त पढ़ा है।

(८)

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, (इलाहाबाद युनिवर्सिटी)—

स्वप्न की कथा सरल, सुन्दर और हृदय-ग्राहिणी है। भावों की मार्मिकता, विचारों की उच्चता और आशय की महत्ता सर्वथा प्रशंसनीय है। दूसरा और चौथा सर्ग मुझे बहुत मनोहारी प्रतीत होते हैं। एक-दो बार तो ऐसी उमंग उठी कि आपके हाथ चूम लेने की उत्कण्ठा उत्पन्न हो गई। ऐसी लोकोपयोगी, उदात्त-भाव-भावित और प्रोत्साहन-प्रदायिनी कविता-द्वारा आप हिन्दी-साहित्य और देश का जो कल्याण कर रहे हैं, उसके लिये देशवासी आपके आभारी रहेंगे। स्वप्न युवकों-युवतियों ही को नहीं, किन्तु सभी स्त्री-पुरुषों को अवश्य पढ़ना चाहिये। मैं आपको इस कृति के लिये बधाई देता हूँ।

(९)

पंडित कामताप्रसाद गुरु—

स्वप्न के द्वारा आपने आजकल के नवयुवकों के दुबिधामय हृदय को चित्रित करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। साथ ही आपने प्रकृति का भी अच्छा चित्र उतारा है। आप लिखते हैं कि मैं कवि नहीं हूँ, पर पुस्तक कहती है कि आप कवि हैं। आपकी कल्पना सरस और रचना मनोहर है।

(१०)

पंडित किशोरीदास वाजपेयी—

आपकी चारों रचनाएँ मैंने बड़े ध्यान और औत्सुक्य से पढ़ीं। इतना आनन्द आया, जितना कभी और कोई भी खड़ी-बोली की

कविता पढ़कर मुझे आजतक नहीं मिला। राष्ट्रीयता प्रत्येक रचना का प्राण है। फिर आपने राष्ट्रीयता को शुष्क नहीं रहने दिया है। मधुर श्रृङ्गार का ऐसा पुट दिया है कि वाह! इसे ही 'कान्तासम्मिततया उपदेश' कहते हैं, जो कविता का मुख्य उद्देश्य है।

स्वप्नों के चित्र बड़े ही मोहक और दिव्य हैं। आपने साहित्यिक रोग का निदान समझकर उसके दूर करने के लिये जो यह सुमधुर आसव तैयार किया है, उससे ऐसी मस्ती आती है, जो चित्त-वृत्ति को भ्रष्ट न करके कर्तव्य-पथ की ओर प्रेरित करती है।

स्वप्न बड़ी उत्तम रचना है। श्रृङ्गार और करुण, हर्ष तथा विषाद की प्रबन्धगत-सन्धि का अच्छा उदाहरण आपने उपस्थित किया है। सुमना के चरित्र-चित्रण से आपने भारतीय-महिला-जगत को एक आदर्श प्रदान कर दिया है। वर्णन-शैली अद्भुत और सजीव है। मनोभावों का घात-प्रतिघात दिल पर मधुर आघात करता है। रस, गुण, अलङ्कार, सब सामग्री ने ऐसी सजावट पैदा करदी है कि क्या कहूँ।

पथिक के दर्शन करके तो दिल काबू ही में न रहा। प्रेम के आलम्बन का विकास बड़ी ख़ूबी से आपने दिखाया है—प्रकृति-प्रतीक-प्रेयसी, प्रकृति की व्यापक मूर्ति और स्वदेश के नर-कङ्काल। बीच-बीच में श्रृङ्गार आदि मधुर रसों ने ज़ायक़ा बदलकर रुचि का विशद परिष्कार किया है। मुझे विश्वास है, आप श्रृङ्गार-रस का बढ़िया से बढ़िया वर्णन करने में सिद्धहस्त हैं। प्रकृति-निरीक्षण भी आपका अनवद्य और स्पृहणीय है। 'पथिक' एक बहुत ऊँचे दर्जे का काव्य है। राष्ट्र को ऐसे ही काव्य चाहिए।

मिलन अपूर्व मादक है। श्रृङ्गार और वीर-रस के सहयोग से देश-प्रेम की ध्वनि ने हृदय को झङ्कृत कर दिया। यह बहुत ही उत्तम

राष्ट्रीय काव्य है। रचना सभी साहित्यिक ख़ूबियों से सम्पन्न है। ऐसे-ऐसे काव्य लिखने के लिये बधाई।

आजकल के युग-परिवर्तनकारी कवि आपकी छाया में छिप जाने लायक़ हैं। जो जानते हैं, उनको यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि क्रान्तिकारी कवि कौन है। पर, सर्व-साधारण भुलावे में पड़ जाते हैं। चेले-चापड़ लोग अपने गुरुओं की प्रतिभा का विज्ञापन देते फिरते हैं। फिर भी, पारखी हीरे को पहचान ही लेते हैं। तभी तो आपकी रचनाओं के इतने अल्प समय में इतने संस्करण निकल चुके।

मैं आपकी रचनाओं की हृदय से क़द्र करता हूँ।

(११)

The Hindustani Academy, (ALLAHABAD)—

The executive committee of the Hindustani Academy, United Provinces, Allahabad, has awarded a prize of Rs. 500 to Pandit Ram Naresh Tripathi on his book 'Swapna' which was considered the best book in Hindi poetry published after Ist January, 1927.

मानसी

सम्पादक—श्रीगोपाल नेवटिया

इसमें पंडित रामनरेश त्रिपाठीजी की फुटकर चुनी हुई कविताओं का संग्रह है। सम्पादक ने प्रारम्भ में एक सारगर्भित भूमिका लिखी है। जिनको खड़ी बोली की कविता से अनुराग हो, वे इसे अवश्य पढ़ें। नवीन संस्करण में और भी नई कवितायें संग्रह की गई हैं। छपाई बहुत ही उत्तम। मूल्य आठ आने। डाक-व्यय ॥)

सम्मतियाँ

(१)

श्री देवदास गाँधी—

मानसी ने मुझे बड़ा ही आनन्द दिया। ठेठ बोली में आपने जो व्यङ्ग और कटाक्ष कहे हैं, मुझे बहुत ही पसन्द आये। धनहीन का कुटुम्ब, नारी, चितवन का जादू, स्मृति, श्याम की शोभा, यह सब बारबार पढ़ने को जी चाहता है। विधवा का दर्पण बड़ाही करुणाजनक है।

(२)

सरस्वती—

प्रायः सभी कविताओं में त्रिपाठीजी की कवित्व-शक्ति का अच्छा परिचय मिलता। त्रिपाठीजी की गणना उन कवियों में की जानी चाहिये, जो कम लिखते हैं; पर जो कुछ लिखते हैं उसमें उनकी शक्ति की शिथिलता नहीं आने पाती।

स्वप्न-चित्र

(नया परिवर्तित संस्करण)

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक के प्रहसन पढ़कर हँसते-हँसते लोटपोट हो जाइयेगा। समझ-समझकर फिर हँसियेगा। भाषा बड़ी सरस, वर्णन-शैली बड़ी मनोहर और विषय बहुत रोचक है। पाठकों को इसके प्रहसनों और कहानियों से साहित्य-सम्बन्धी कितनी ही नई बातें मालूम होंगी।

प्रहसन और कहानियों के नाम ये हैं:--

१—कवियों की कौंसिल; २—स्त्रियों की कौंसिल; ३—कवि; ४—सीज़न डल है; ५—राजा; ६—नख-शिख; ७—नायिका-भेद; ८—दिमाग़ी ऐयाशी; ९—हृदय की हार।

छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। मूल्य आठ आने। डाक-व्यय ।।)

सम्मति

(१)

सरस्वती—

आश्चर्य की बात यह है कि इस उन्नति के युग में भी हिन्दी में अभी ऐसे कवियों का एक दल मौजूद है जो आँख मूँदकर पुरानी लकीर पर चला जा रहा है और ब्रजभाषा तथा उसके शृङ्गार-रस, नख-शिख-वर्णन और नायिका-भेद आदि में उलझा हुआ है। इसी दल को सुमार्ग पर लाने के उद्देश्य से त्रिपाठीजी ने समय-समय पर कुछ विनोद-पूर्ण लेख लिखे थे। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं लेखों का संग्रह है। प्राचीन शृङ्गारी कविता के दोषों के विरुद्ध जो कुछ भी लिखा जा सकता है, वह सब इसमें त्रिपाठीजी ने बड़े अच्छे और मनोरञ्जक ढंग से लिखा है। इस पुस्तक में आपने यह सिद्ध किया है कि नख-शिख-वर्णन से किसी स्त्री या पुरुष का वास्तविक चित्र नहीं खिंच सकता, नायिका-भेद से स्त्रियों के प्रति व्यर्थ में अविश्वास पैदा होता है, प्राचीन ढंग की कविता करनेवाले कवि-समाज का कोई हित नहीं कर सकते और शृङ्गारी कविता से व्यभिचार और चरित्रहीनता को प्रोत्साहन मिलता है।

कविता के संबन्ध में त्रिपाठीजी के ऐसे क्रांति-मूलक विचार पढ़कर

हमें प्रसन्नता हुई है। इस पुस्तक की रचना कुरुचि और चरित्रहीनता उत्पन्न करनेवाले साहित्य का विरोध करने के लिये हुई है। यह उद्देश्य जितना सुन्दर है, उतना ही पवित्र भी है।

हिन्दुस्तानी-कोष

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें संस्कृत, अपभ्रंश, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी, ब्रजभाषा, बङ्गला, मराठी तथा गुजराती के वे सब शब्द जमा किये गये हैं, जो हिन्दी और उर्दू ज़बान में आम तौर से चलते हैं। इस एक कोष से हिन्दी और उर्दू दोनों ज़बानों का काम चल सकता है। यह कोष राष्ट्रभाषा और हिन्दुस्तानी सीखने के लिये दक्षिण-भारत, बङ्गाल, गुजरात, आसाम, पंजाब, सिन्ध, राजपूताना और महाराष्ट्रवालों के बड़े ही काम का है। इसमें बहुत से ग्रामीण शब्दों का भी संग्रह है जो हिन्दी के लिये बहुत उपयोगी है। पृष्ठ-संख्या ७४०; शब्द लगभग २०००० । सजिल्द का दाम दो रुपये। डाक-व्यय ।।।=)

सम्मतियाँ

(१)

महात्मा गाँधी—

कोष की भूमिका पढ़ गया हूँ। आपका प्रयत्न मुझे तो बहुत ही पसन्द आया है। दूसरी भाषाओं में से शब्द लेकर हिन्दी ने कुछ नहीं गमाया है। हमसे बन पड़े तो हम भाषा में भी छुआछूत कर सकते हैं। लेकिन ईश्वर का अनुग्रह है कि हिन्दी अस्पृश्यता के कलंक से बच रही है।

(२)

वर्तमान (कानपुर)—

यह पुस्तक हिन्दी-संसार में एक अनूठी वस्तु है। त्रिपाठीजी का परिश्रम स्तुत्य है। इससे हिन्दी के शब्द-भंडार की वृद्धि में बहुत सहायता मिलेगी। प्रस्तुत पुस्तक लेखकों, सम्पादकों और कवियों के बड़े काम की वस्तु है। आशा है, वे इसका यथेष्ट आदर करेंगे।

(३)

स्वराज्य (खँडवा)—

अपने ढंग का अच्छा कोष है। इसमें हिन्दी और उर्दू में आमतौर से प्रचलित संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी और पोर्चुगीज़ आदि भाषाओं तथा युक्तप्रांत के देहाती शब्दों का संग्रह किया गया है। यह 'कोष' राष्ट्रभाषा सीखनेवालों के लिये बड़ा सहायक होगा। मद्रास, महाराष्ट्र आदि प्रांतों के राष्ट्र-भाषा-प्रेमियों के यह बड़े काम का है। ७४० पृष्ठों के पोथे का मूल्य २) प्रचार की दृष्टि से ठीक रखा गया है।

जयन्त

(नाटक)

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी में मौलिक नाटकों का बड़ा अभाव है। इसी उपालम्भ से प्रेरित होकर त्रिपाठीजी ने प्रस्तुत नाटक की रचना की है। नाटक बहुत ही सुन्दर है। इसका कथानक सामाजिक और राजनीतिक है। इसमें करुण-रस और अत्याचार के दृश्य बड़े ही लोमहर्षक हैं। सीधी-सादी भाषा में ग़रीबों का बड़ा ही हृदयहारी वर्णन है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वानों और पत्र-पत्रि[illegible]त की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। नाटक-

प्रेमियों को एक बार इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। मूल्य केवल आठ आने; डाक-व्यय ॥)

सम्मतियाँ

(१)

जागरण (काशी)—

नाटक बहुत ही सुन्दर है। ग़रीबों पर अमीरों के अत्याचार का नग्न चित्र बड़ा ही रोमाञ्चकारी है। कथावस्तु कल्पित और सामाजिक है। जयन्त, कुसुम, कल्याणी और मनोहरलाल का चरित्र बड़ी ख़ूबी के साथ अङ्कित किया गया है। जयंत के जीवन पर देवदत्त और उसके गुरु के भावों की बड़ी सुन्दर एवं मिश्रित छाप है। कल्याणी का चरित्र बिल्कुल देवी-सा है। नाटक सुखान्त और आदर्शवाद का नमूना है। भाषा सरल और मँजी हुई है। स्थान-स्थान पर सूक्तियाँ और भावात्मक वाक्य भी हैं। गाने भी कम तथा अवसर के उपयुक्त रक्खे गये हैं। दूसरा अङ्क बहुत ही सुंदर है। इसमें कुसुम और जयंत के विचार तथा जयंत का भाषण सुन्दर है। घटनाओं का तारतम्य इस प्रकार है कि रोचकता नष्ट होने की संभावना नहीं है।

प्रस्तुत नाटक पाँच दिन में लिखा गया होकर भी (जैसा त्रिपाठीजी ने स्वयं लिखा है) साहित्य और सर्वसाधारण दोनों ही की दृष्टि से अच्छा बन पड़ा है। मंच पर बड़ी सफलता के साथ अभिनीत हो सकता है।

(२)

भारती (लाहौर)—

त्रिपाठीजी उन अनुभवहीन लेखकों में नहीं हैं, जो लोक-रुचि की अवहेलना करते हुये एकांत में नीरव हृत्तंत्री बजाते-बजाते अनाघ्रात

कुसुम की तरह समाप्त हो जाते हैं। वे हिंदी की पुरानी पौध के उन अनुभवी और चतुर लेखकों में अग्रगण्य हैं, जो हर युग में जनता की माँग को सजग होकर अनुभव करते हैं, और अपनी हर कृति पर ठोस सफलता प्राप्त करते हैं। 'कविता-कौमुदी' के प्रकाशन से कविता-संग्रह-जगत में और 'पथिक' की रचना के द्वारा कथानक खंडकाव्य के क्षेत्र में वे अनुकरणीय नेतृत्व कर चुके हैं।

प्रस्तुत नाटक का कथानक चुनने में कल्पना-कुशल लेखक ने हमारे रंगमञ्च की प्रचलित 'भेड़ियाधसान' वृत्ति का अनुसरण नहीं किया है। उनकी कहानी एक नवीन दिशा की ओर इङ्गित करती है। बाज़ारू प्रेम-कथाओं को अपनाने के बदले उन्होंने एक ऐसी कहानी की सृष्टि की है, जिसमें उनकी कला के सुपरिचित आधार—दीन-दुखियों के प्रति सहानुभूति—का विकास हुआ है।

त्रिपाठीजी ने गानों की असामयिक भरमार की लोकप्रिय प्रथा का बहिष्कार करके संगीत की दृष्टि से इस नाटक को संयत, सरल और सुंदर बना दिया है।

नाटक की भाषा आदि से अन्त तक सरल है; जो इसके अभिनय की सफलता में काफ़ी सहायक हो सकती है। बीच-बीच में चमत्कृत कर देनेवाली सूक्तियों और हृदय को ऊँचा उठानेवाले भावों के भी दर्शन होते हैं।

इस नाटक की एक-एक पंक्ति उच्चकोटि के आदर्शवाद के उज्ज्वल प्रकाश में लिखी गई है। अतः हमें आशा है कि, बाज़ारू नाटक-कम्पनियाँ भले ही इसकी उपेक्षा करें, पर चरित्रवान् युवक और युवतियों की मित्र-मंडलियों में इसका पर्याप्त आदर होगा। अभिनय के लिये सुरुचिपूर्ण मौलिक नाटक खोजनेवालों को इससे आशा का संदेश मिलेगा।

(३)

प्रताप (कानपुर)—

चरित्र-चित्रण में लेखक को काफ़ी सफलता मिली है। जयन्त और उसकी बहन कुसुम तथा कल्याणी का चित्रण अच्छा किया गया है। पूँजीपतियों के अत्याचारों का शिकार होकर जयन्त जैसे साधारण (?) व्यक्ति के हृदय में विद्रोह तथा प्रतिशोध की भावना कैसे जाग्रत होती है और वह डाकू बनकर किस प्रकार अपने समान दलित प्रजा के उद्धार तथा न्याय के लिये लड़ता है, इसका वर्णन बड़ी ख़ूबी के साथ किया गया है। राजकुमारी पद्मावती का हृदय-परिवर्तन तथा न्याय के लिए एक डाकू की चिरसंगिनी बनना साम्यवाद के उज्ज्वल भविष्य का परिचायक है।

(४)

भारत (प्रयाग)—

प्रस्तुत नाटक में सीधी-सादी भाषा में, हृदय की स्वाभाविक शैली में, लेखक ने ग़रीबों का जो चित्र इसमें अंकित किया है, वह पत्थर को भी पिघला देनेवाला है। जान पड़ता है, ग्रामगीतों की तरह ही करुण ग्रामीण दृश्यों से भी उन्होंने आत्मीयता जोड़ ली है।

नाटक में अत्याचारों के प्रतिकार के लिए त्रिपाठीजी ने जो साधन प्रदर्शित किये हैं, वे बहुत ही रोमैन्टिक हैं—कोमल होकर भी बहुत कठोर हैं, कठोर होकर भी बहुत कोमल हैं। इसमें महात्मा गाँधी जैसे प्रशान्त हृदय और समुद्र की भाँति उद्दाम-वेग तरुण हृदयों का अद्भुत सामञ्जस्य है।

मानवता के उत्थान मे स्त्रियों का सहयोग भी वाञ्छनीय है। त्रिपाठीजी ने दिखलाया है कि राष्ट्र के कल्याण के लिये स्त्रियों में भी साहस, शौर्य्य और उत्साह सभी पुरुषोचित गुणों के विकास की आवश्यकता है। किन्तु किस पथ से ? पाश्चात्य पथ से नहीं, बल्कि

भारत के ही प्राचीन पथ से; आर्य-संस्कृति और आर्य-शिक्षा से परिष्कृत और उज्वल होकर। उस समय हमारी देवियाँ स्वतंत्र होते हुए भी, पाश्चात्य नारियों की तरह सामाजिक अशान्ति का कारण नहीं बनेंगी।

यह नाटक सुखान्त है। इसके छोटे-छोटे दृश्य छायापट के चल-चित्रों की भाँति आकर्षक हैं। दर्शकों पर बहुत प्रभाव डालेगा, कहने की आवश्यकता नहीं।

(५)

पंडित किशोरीदास वाजपेयी—

'जयन्त' के दर्शन पाकर अत्यन्त आनन्द हुआ। आपको इस दिशा में भी पूर्ण विजय प्राप्त हुई है। मुझे 'जयन्त' बहुत पसन्द पड़ा है। यह स्कूल-कालेजों में भी अभिनय करने योग्य है और अवश्य इसका अभिनय होना चाहिए। खूब रस-परिपाक हुआ है। बधाई।

(६)

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

'जयन्त' के लिये अनेक धन्यवाद। आप तो इच्छामात्र से ही नाटककार होगये। बहुमुखी प्रतिभा का यही तो लक्षण है। साहित्य के अनेक विभागों में आपका एक विशेष स्थान निश्चित है। ऐसे साहित्यिक के कृपा-पात्र होने के नाते मैं भी अपने को धन्य समझता हूँ।

(७)

युवक (गुजराती—बड़ोदा)—

श्री त्रिपाठी नुं आ प्रथमज नाटक छे। अने घणा सुन्दर ने संस्कारी रीते लख्या छे। आ नाट्य-कृति श्राव्य कर्तां दृश्ये माँ वधारे खीली शके तेम छे। श्री त्रिपाठीजी हवे नाट्यो माँ स्थायी रस केलववा मथशे तो एमना काव्यो जेवी उत्तम नाट्य-कृतियो वाचको ने आपी शकशे।

(८)

आचार्य रामदेव (कन्या गुरुकुल, देहरादून)—

मैंने आज प्रातःकाल 'जयन्त' और 'प्रेमलोक' दोनों पढ़ डाले। जयन्त के पढ़ने से तो इतना सिद्ध होता है कि सफल नाटक-कला-विशारद के सब गुण आपके अन्दर निहित थे, थोड़ी-सी उत्तेजना मिली कि वह गुण प्रकाशित होगये; किन्तु प्रेमलोक में तो आपने कमाल ही कर दिखलाया। नाटक क्या है, उस रूप में क्रियाशील मनोविज्ञान का निचोड़ और धर्म के तत्त्वों का दिग्दर्शन है। भाव गम्भीर हैं, भाषा सरल और सुन्दर है, करुण-रस तो कूट-कूटकर भरा हुआ है, कृत्रिमता और बनावट तो इस पुस्तक में है ही नहीं। ऐसी घटनाओं का वर्णन किया हुआ है कि जो इस विश्व में नित्य प्रति दिखाई पड़ती हैं और जो नाटक-कार ने अपने पास से बढ़ाई हैं, वह भी सहस्रों शिक्षित और भावपूर्ण मनुष्यों के हृदय-मंच पर घटित होती ही रहती हैं, इसलिये अस्वाभाविक प्रतीत नहीं होतीं और न आश्चर्य-जनक ही बोध होती हैं।

(९)

पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी—

जयन्त पढ़ लिया। अच्छा है। जो कुछ लिखते हैं, खूब ही लिखते हैं। नाटक में भी आप नाम करेंगे, इसमें सन्देह नहीं। बधाई है।

(१०)

सेवा (प्रयाग)—

जयन्त और प्रेमलोक यह दोनों हिन्दी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक पं० रामनरेश त्रिपाठी के लिखे मौलिक सामाजिक नाटक हैं। साहित्य के इस क्षेत्र में पंडितजी का यह प्रथम प्रयास है।

आशा है कि इनकी समर्थ लेखनी से और भी कई नाटक लिखे जायँगे और साहित्य के इस विभाग को भरा-पूरा करेंगे। प्रस्तुत दोनो पुस्तकों की भाषा सरल, सुन्दर तथा मुहावरेदार है। दोनों के विषय भी अत्यन्त रोचक, रोमाञ्चकारी और शिक्षाप्रद हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यह नाटक रंग-मञ्च पर अच्छी तरह खेले जा सकते हैं।

(११)

हिन्दू (मद्रास)—

Srijut Ramanaresa Tripathi whose dramatic work "Prema-Loka" had been noticed by me in a previous issue of the Educational and Literary Supplement of "The Hindu", has now published another entitled "Jayanta" which in the matter of the central plot, language and of the didactic element reveals a sustained effort that would surely enhance its value as a contribution of importance to the stock of contemporary Hindi literature.

Srijut Ramanaresa Tripathi is a prolific writer, and this drama, the composition of which was commenced on the 11th. January, was completed on the 16th. It is not clear if "Premaloka" and "Jayanta" have been actually staged anywhere. and I trust lovers of "Hindi" in these Parts will endeavour to put them on boards so that their scenic effect may be judged. It seems to me that both "Premaloka" and "Jayanta" reveal excellences and attractions just where they have brushed aside conservative conventionalities.

R. Naga Raja Sarma.

प्रेम-लोक

(नाटक)

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

यह त्रिपाठीजी का दूसरा नाटक है। लोगों ने इसे जयन्त से भी ऊँचा स्थान दिया है। मूल्य केवल ॥) । डाक-व्यय ॥)

सम्मतियाँ

(१)

स्वराज्य [खण्डवा]—

प्रेमलोक पाँच अंकों में समाप्त हुआ है। इसमें 'प्रेम' की वास्तविकता बतलाई गई है। प्रेम और मोह की विशद व्याख्या की गई है। पात्रों का चरित्र-चित्रण अच्छा किया गया है। नाटक की भाषा मधुर और साहित्यिक है। नाटकों से प्रत्यक्ष उपदेश देने का कार्य लिया जाता है। अतएव उनमें सूक्तियों का होना आवश्यक है। 'प्रेम-लोक' में इस तरह की सूक्तियों का अभाव नहीं है। एक जगह किरण कहती है :—"सुख संसार के कोलाहल में नहीं है; बल्कि अपने शरीर की शक्तियों को संसार की सेवा में लगाकर आत्मा को संतुष्ट करने में है।" किरण के मुँह से नाट्यकार ने जीवन की ऊँची-से-ऊँची फिलासफी कहलाई है। वह एक जगह कहती है—"किसी के लिये हृदय में प्यार लेकर चलने से जीवन का लम्बा रास्ता सुख से कट जाता है।"

पहले अंक के तीसरे दृश्य में एक असंस्कृत पति के साथ सुशिक्षित, के सम्मिलन का हास्यास्पद दृश्य दिखाया गया है! हमारे समाज में बे-मेल विवाह से जो 'असंतोष', 'हाहाकार' छाया है, उसका भी दृश्य प्रेम-लोक में दिखलाई देता है। हिन्दी में अभी मौलिक नाटकों

का अभाव है । आशा है, त्रिपाठीजी की प्रतिभा इस आशा की पूर्ति में ही अब खर्च होगी ।

(२)

हिन्दू (मद्रास)—

Srijut Ramanaresa Tripathi whose previous drama Jayanta'' in Hindi is already before the public has naw written the drama under notice entitled "Prema Loka". in the same tongue.

There is sufficient, sustained dramatic interest in the evolution of the plot, and the play is stageworthy. The dialogues are crisp and pointed, and it is the didactic element that is striking. Srijut Ramanresa Tripathi is an advocate of the "Hindi" of the modernised type, and I find English terms like "trust" "trustee" incorporated into the "Hindi" structure, aprocedure to which conservative pandits may take odjection, but which is decidedly better than erroneous translations.

(३)

रायबहादुर कुमार कौशलेन्द्रप्रताप साही

(दिअराराज, सुलतानपुर)—

Prem-Lok is indeed an interesting drama and has its value as a means to social reform.

(४)

रायबहादुर कुँवर सुरेन्द्रप्रताप साही, M. L. C.

(दिअराराज, सुलतानपुर)—

I have read your recent drama 'Prem-Lok' and have great pleasure in congratulating you for the

excellent work. It is of absorbing interest. It is both Romantic andl Pathetic, and comic touches are delightfully refreshing. The character sketching is masterly. I was much amused and highly impressed.

I wish you brought out some more of its kind.

(५)

शारदा (गुजराती—बड़ोदा)—

पंडित रामनरेश त्रिपाठी एटले हिन्दी भाषा ना समर्थ साक्षर. पंडितजी हिन्दी लोकसाहित्यना संग्राहक तरीके समग्र हिन्द माँ मशहूर छे। लोकसाहित्यना ये समर्थ संग्राहके नाटक लखवानु आ पुस्तक थी शरू कर्यु छे। पंडितजी पोते भूमिका मां जणावे छे के हिन्दी मां मौलिक नाटको बहु ओछां छे अने ए दृष्टि स्नेही मित्रोना आग्रह थी एमणे नाटक लखवानु आ कार्य शरू कर्यु। छ दिवस मां एमणे आ नाटक लखी नाख्युं। अमे आ नाटक वाँची गया छीए अने अमारे कहेवुं जोइए के लोकसाहित्यना ए संग्राहक आ 'जयंत' नाटक लखवामां सफल थया छे। आ नाटक पुस्तक मां थी पंडितजी नी पात्रालेखननी सुन्दर कलानु दर्शन थाय छे। पंडितजीए आ आखीय वस्तुने एटली बधी सरस रीते लखी छे के आ नाटक हिन्दी भाषान प्रथम पदमां गणातां मौलिक नाटकोनी पंक्तिमा आवी शकशे। भाषा सरस अने मीठी छे। 'शारदा' ना वाचको आ हिन्दी पुस्तक वाँचे एवी अमारी भलामण छे।

गो० द्वा० रायचुरा

सम्पादक

तरकस

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में त्रिपाठीजी की १० चुनी हुई कहानियाँ संगृहीत हैं। भाषा अत्यन्त सरल और वर्णन-शैली अत्यन्त मनोरंजक है। मूल्य ॥); डाक-व्यय ॥)

कहानियों के नाम ये हैं—

१—प्रेम की भूमिका २—कवि का स्वप्न ३—उन बच्चों का क्या हुआ? ४—सहसा विदधीत न क्रियाम् ५—भीखिन मँगवञ्र् ६—कुणाल ७—संसार ८—कभी मैं भी दुलहिन थी ९—बफ़ाती चाचा १०—नई बहू, पुरानी सास।

सम्मतियाँ

(१)

THE HINDU. (31-7-34)—

"Tarkas" is a striking contribution to Hindi literature. Pandit Ramnaresh Tripathi has justly earned a reputation as one of the foremost among Hindi writers of to-day. An erudite scholar, he is also a prolific writer and has to his credit a large number of works in poetry, drama and prose. In the dook under review, he shows himself equally good at writing short stories. The book contains ten stories, treating of a variety of subjects, from the ordinary incidents of the work-a-day world to the sublime theme of maternal love. Each of these stories is highly interesting. Some of them, "Kunal" and the other one about the poet Bharavi for

instance, rest on a historical background while "Bafati Chacha" bears a topical reference to the vexed problem of Hindu-Muslim aminy "Nayi Bahu, Purani sas" (the modern bride and the old-fashioned mother-in-law) is a story which is bound to make every reader pause and reflect on what is passing in the world of Indian women to-day. The modernised "educated" girl appears to be developing a complex which is raising a wall-between her anb her "uneducated" old-fashioned elder. The author, skilful artist that he is, does nof express any view, but leaves the reader to draw his own conclusions. Among the other stories may be mentioned "Kavi Ka Svapna" (the poet's dream)—which is strongly reminiscent of the author's dramatic work, "Prem Lok", and "Sausar" "Kabhi mem bhi Dulhin Thi" which are cast in a lighter vein.

The stories are narrated in a clear and vigorous style, incisive and direct. Mr. Tripathi is one of those who revolt against the literary bigotry which abhors the use of foreign words, though they are in common usage and are easily understood, but insist on employing laboured tanslations which it is a task for the average reader to understand. In this book, one comes across English words which have become more or less current in many Indian vernaculars, such as "up-to-date", "Trustee", "office", "powder", "cinema", and "slipper."

The book is well got up, clearly printed and what is more, priced low.

(२)

The Hindustan Times (24-9-34)—

This is a collection of ten short stories by a writer whose reputation both as a prose-writer and poet is well established. Pandit Ram Naresh Tripathi wields a facile pen. The stories collected in this volume deal, mostly, with our every-day life and thus hold a mirror to our society. The one entitled 'Bafati Chacha' is a perfect piece. In some others, however, an obvious didacticism is to be noticed.

(३)

Advance India—(May, 1935)

It is a collection of ten short stories in Hindi. All the stories deal with Modern Social topics and are quite interesting. The style is crisp and elegant. The stories 'The Poet's Dream', 'Uncle Bafati', 'The old mother-in-law vs. the new daughter in law' deserve special mention.

(४)

The Leader (27-8-34)—

The author is a practised writer of good prose. Most of the stories are full of incidents and have evidently been written with a purpose. The third and the ninth stories are excellent examples of this kind. Some others like the first two ate attempts at a mere tmagi-

native kind of writing. The entire collection is full of interest and instruction.

(५)

Roy's Weekly (Delhi, July, 1936.)—

The book is one of the best ever written in the Hindi language and the themes it provide a very wide field for concentrated thought. Pandit Ram Naresh would not be ill-advised if he translates his works in English and other languages when the public might do better justice to his genius and attainments.

(६)

The New Orissa (September, 25/1934.)—

'Taikas' contains ten good and interesting stories written in simple and chaste Hindi. Each has a moral to tell and a lesson to teach. The one relating the new daughter-in-law and the old mother-in-law is worth reading and illustrates the difficulties of adjusting our old environments to new ideals and fashions in the period of transition.

S. B. R.

(७)

स्वराज्य (खंडवा, ३१-७-३४)—

त्रिपाठीजी की कहानियों में भाव-प्रवणता का आधिक्य होता है। वे कहानी का प्रारम्भ सुन्दरता से करते हैं और अन्त भी। उनका 'कवि

का स्वप्न' कहानी के रूप में सुन्दर 'एलीगेरी' (रूपक) है। आपकी 'तरकस' की सभी कहानियाँ आकर्षक एवं रोचक है। प्रत्येक कहानी में एक रस है, एक 'थीम' है। जिसका विकास स्वाभाविकता के साथ किया गया है। हम त्रिपाठीजी को इन कहानियों के लिये बधाई देते हैं। हिन्दी जनता में इनका समुचित आदर होना चाहिये।

(८)

प्रताप (कानपुर, १६ अगस्त, १६३४ ई०)—

पंडित रामनरेश त्रिपाठी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि हैं। आप क 'पथिक' तथा अन्य कवितायें हिन्दी-साहित्य में यथोचित आदर पा चुकी है। इधर आपने नाटक और कहानियाँ भी लिखी हैं। प्रस्तुत 'तरकस' आपकी दस कहानियों का संकलन है। इन कहानियों में 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' 'भीखिन मंगबश्र्' और 'बफाती चाचा' उत्तम बन पड़ी है। 'भीखिन मंगबश्र' में सीतल का चरित्र-चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक है। उसकी-सी स्वामि-भक्ति आज-कल भी कतिपय पुराने नौकरों में देखी जाती है। 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' की पुरानी कथा का यह नया स्वरूप अत्यन्त रोचक है। 'उन बच्चों का क्या हुआ' शीर्षक कहानी वात्सल्य-रससे ओतप्रोत तथा देश की द्ररिद्रता का परिचायक है। इन सब की भाषा सुसंगठित तथा सरल है।

(६)

सेवा (प्रयाग, सितम्बर, १६३४)—

कहानियाँ एक से एक अच्छी हैं। शैली भी बहुत अच्छी है। 'बफाती चाचा' इत्यादि कहानियाँ अपने ढंग की अनोखी हैं। छपाई इत्यादि अच्छी है।

गोसाईं तुलसीदास का

रामचरितमानस, मूल

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

यह तुलसीदास के रामचरितमानस का अधिक से अधिक शुद्ध संस्करण है। अभी तक तुलसीदास के हाथ का लिखा हुआ असली 'मानस' नहीं मिला है। पर प्राचीन से प्राचीन प्रतियों से मिलाकर बड़े परिश्रम से इसका पाठ ठीक किया गया है। जो लोग तुलसीदास के शुद्ध पाठवाले रामचरितमानस के प्रेमी हों, उन्हें यह संस्करण अवश्य देखना चाहिये। छपाई-सफ़ाई सुन्दर; कपड़े की सुवर्णाङ्कित जिल्द; दाम केवल दो रुपये।

रामचरितमानस, सटीक

टीकाकार—रामनरेश त्रिपाठी

अबतक रामायण के जितने संस्करण निकले हैं, उन सबसे अधिक शुद्ध यही संकरण है। प्राचीन से प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर इसका पाठ शुद्ध किया गया है। मूलपाठ में कितने ही नये संशोधन हुये हैं, जिनका अबतक किसी को पता ही नहीं था। और टीका की विशेषता तो उस पर आई हुई सम्मतियों में पढ़ लीजिये। यह टीकाकार के दस वर्षों के अखंड परिश्रम का फल है। टीका में एक-एक शब्द की काफी छान-बीन की गई है, और कवि के हृदय का असली भाव व्यक्त करने का भरसक प्रयत्न किया गया है। टीका की भाषा विशुद्ध परिमार्जित है। भूमिका में तुलसीदास ही के काव्यों से उनका बहुत-सा जीवन-चरित्र निकाला गया है, जो बड़ा ही रोचक और बहुत ही प्रभावशाली

है। तुलसीदास के घर का भी पता चल गया है; उनके वंशज भी मिल गये हैं और इसमें उनके हाथ की लिखावट का फोटो भी दिया गया है। तुलसीदास का असली चित्र बड़ी खोज से मिला है, जो इस संस्करण में है। भूमिका में उनकी कविता पर साहित्यिक दृष्टि से विचार किया गया है।

पृष्ठ-संख्या १६००; आकार बड़ा; टाइप मोटा; छपाई-सफ़ाई सुन्दर; रंगीन कपड़े की मज़बूत जिल्द; मूल्य केवल पाँच रुपये। डाक-व्यय एक रुपये आठ आने।

सम्मतियाँ

(१)

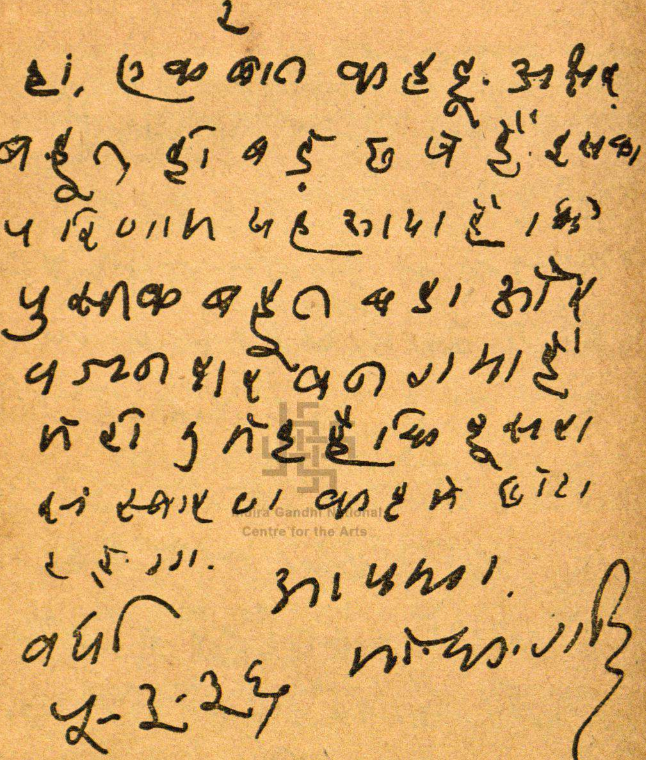
Mr. A. G. Shirreff, I. C. S.

(कमिश्नर, फ़ैज़ाबाद डिवीज़न)—

Pandit Ram Naresh Tripathi's new edition of the Ramcharitmanas of Tulsi Das is a book which should certainly be in all school libraries. Himself a poet and linguist of the first rank Pandit Ram Naresh Tripathi has applied his special gifts to the interpretation of Tulsi Das's work, and his unrivalled knowledge of poetical usage and colloquial Hindi has called him to throw fresh light on many passages and to correct the errors of previous commentators. His introduction and prose reading contain much original work of the lightest value and I think the book will be indispensable for students of Tulsi Das. It is handsomely printed and produced and will be a very suitable book for school prizes as well as for libraries.

(૨)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]



भाई रामनरेशजी,

आपका खत मिला है और सटीक मानस भी। आजकल आराम के दिनों में रोज़ आधे घंटा रामायण सुनता हूँ। तीन दिन से आपही का पुस्तक पढ़ता हूँ। जो प्रसंग चल रहा है, सो तो पढ़ता ही हूँ। और

भूमिका से आरम्भ किया है। अब जीवनी चलती है। मेरी तो आपके अनुवाद पर श्रद्धा है। इसलिये इस बारे में तो क्या लिखूँ ?

हाँ, एक बात कह दूँ। अक्षर बहुत ही बड़े छपे हैं। इसका परिणाम यह आया है कि पुस्तक बहुत बड़ा और वज़नदार बन गया है। मेरी उमेद है कि दूसरा संस्करण क़द में छोटा रहेगा।

वर्धा
५-३-३६

आपका
मो० क० गाँधी

(३)

C. E. A. Oldham Esq., (London)—

Your labour has been a labour of love and I may congratulate you upon the success with which you have performed your task.

(४)

R. L. Turner Esq., (London)—

My dear Mr. Tripathi,

It ls exedingly kind of you to have sent me a copv of your fine edition of the work of the greatest poet and teacher of Hindus'an in the middle ages.

It is good to have here your account of his life and the excellent tika that you have given with the text. Every line takes me back to those happy days when I lived in Kasi and could in person make pilgrimage to the तुलसीघाट on the banks of that incomparable and mighty Ganga, on which Tulsidas himself must so often gazed and drawn inspiration.

(५)

आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी—

पंडित रामनरेशजी त्रिपाठी की सम्पादित तुलसी-कृत सटीक रामायण (रामचरित-मानस) को देखकर मुझे परमानन्द हुआ। मैंने आजतक इस परम पावन पुस्तक के कई संस्करण देखे हैं; पर मुझे यह संस्करण उन सबसे श्रेष्ठ मालूम हुआ। तुलसीदास के जीवन और उनकी कविता आदि के सम्बन्ध में त्रिपाठीजी ने बहुत कुछ खोज की है। पुस्तक के आरम्भ में आपने कोई ३०० पृष्ठ व्यापी एक प्रबन्ध लिखकर उसमें उसका समावेश कर दिया है। इस निबन्ध में अनेक नई-नई ज्ञातव्य बातें हैं। आपकी कितनी ही उद्भावनायें और अनुमान बड़े ही महत्त्व के हैं। टीका भी आपकी सुन्दर और सुसंयत है। बधाई।

महावीरप्रसाद द्विवेदी
२२—२—३६

(६)

श्री हरिऔधजी—

आपकी भूमिका विशेष पांडित्य-पूर्ण है। आपके लेखों में जिस प्रतिभा और मौलिकता का विकास होता है, वह आदरणीय ही नहीं, उल्लेखनीय भी है। रामायण का मैं अनुरक्त हूँ। मैंने उसकी अधिकांश टीकायें देखी हैं; उसकी सुन्दर से सुन्दर भूमिकायें पढ़ी हैं। परन्तु आपकी भूमिका सबसे विलक्षण है। टीका भी अनेक स्थानों की अधिक सुन्दर है। कहीं-कहीं आपकी उद्भावनायें बहुत ही अपूर्व हैं। उनमें नवीनता ही नहीं, खोज भी मिलती है।

रामायण को इस रूप में प्रकाशित करने के लिये मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ।

बनारस
२०—२—३६

हरिऔध

(७)

बाबू मैथिलीशरण गुप्त—

आपकी अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्य-सेवाओं में से रामचरितमानस की टीका भी एक है। सचमुच आपने बड़ा परिश्रम किया है और वह राम-कृपा से सफल भी हुआ है। रामायण के प्रेमी उसके लिये आपके चिरकृतज्ञ होंगे और गुसाईं जी की आत्मा आपको असीसेगी ?

मैं तुलसीदास को कवि से पहले भक्त ही मानता हूँ; पर जो आपकी राय है, वही मेरे आचार्य की भी है।

(८)

माननीय सर सीताराम साहब,

(युक्तप्रान्त की कौंसिल के प्रेसीडेंट)—

प्रियवर रामनरेशजी,

अब मुझे थोड़ा-सा अवकाश आपके रामचरितमानस को देखने का हुआ। टीका तो सुन्दर है ही, परन्तु आपने जीवनी पर तथा पूर्व वचन पर बड़ा ही परिश्रम किया है और अपनी सुपरिचित योग्यता तथा साहित्य-प्रेम का नया उदाहरण दिया है। मुझे पूर्ण आशा है कि लोग इसका समुचित आदर करेंगे।

(९)

विश्वमित्र (मासिक, कलकत्ता)—

इस संस्करण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है इसकी ३०० पृष्ठों से अधिक की विस्तृत भूमिका, जिसमें विद्वान् टीकाकार ने गोस्वामी तुलसीदास के जीवन एवं उनकी काव्य-रचनाओं से सम्बन्ध रखनेवाले

बहुत से विषयों पर नवीन ढङ्ग से प्रकाश डाला है। भूमिका-भाग में मानस-मधु शीर्षक स्तम्भ के अन्तर्गत संस्कृत-ग्रन्थों के अवतरणों के साथ रामचरित-मानस के दोहों, चौपाइयों का जो साम्य दिखाया गया है, वह बहुत ही उपयोगी है। इसी प्रकार मानस की सूक्तियाँ रामचरितमानस का भूगोल, तुलसीदास का वाणी-विलास, तुलसीदास का अन्तर्जगत् तथा तुलसीदास की अन्यान्य रचनाओं के सम्बन्ध में ऐसे अनेक ज्ञातव्य विषयों का समावेश किया गया है, जिससे रामचरित-मानस के इस संस्करण का भूमिका-भाग निस्सन्देह एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है। हमें आशा है, रामायण के इस महत्त्व-पूर्ण सटीक संस्करण का रामायण-प्रेमियों में यथेष्ट आदर होगा।

(१०)

बाबू ब्रजनन्दनसहाय, (आरा)—

गोस्वामीजी के विषय में कोई ऐसी बात नहीं है, जिसका उल्लेख इस पुस्तक में न हुआ हो। 'क्रान्तिकारी-काव्य' शीर्षक विषय तो एकदम नवीन है। इस दृष्टिकोण से आजतक किसीने गोस्वामीजी की कविता की आलोचना नहीं की थी। त्रिपाठीजी की पुस्तक को रामायण के रसिकों को एक बार अवश्य पढ़ लेने का मैं अनुरोध करूँगा। पुस्तक आदरणीय तथा संग्रहणीय है।

(११)

पंडित गिरिधर शर्मा, नवरत्न, (राजगुरु, झालरापाटन)—

यह टीका बहुत अच्छी बन पड़ी है। तिलक का कर्म-रहस्य जैसे पढ़ने की एक अपूर्व चीज़ है, वैसे ही आपकी रामायण की विस्तृत विवेचना विचार करने योग्य है।

(१२)

पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी

(शांति-निकेतन, ३-३-३६)—

रामायण की भूमिका मैंने पढ़ ली है। आपके योग्य ही इसका संग्रह हुआ है।

प्रो॰ श्री क्षितिमोहन सेन आपकी रामायण को बहुत munately पढ़ रहे हैं। आपने जो यह ग्रंथ-रत्न मेरे पास भेजकर अध्ययन करने का मौका दिया है, इसके लिये मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

(१३)

सेठ कन्हैयालाल पोद्दार

(मथुरा, द्वि॰ भा॰ कृ॰ १०-१९९३)—

आपने रामचरितमानस की भूमिका बड़ी उपयोगी और सारगर्भित एवं विद्वत्ता-पूर्ण लिखी है। पूज्यपाद गोसाईंजी के ग्रंथों के विषय में तथैव उनके जीवन-चरित्र पर जो खोज पूर्ण प्रकाश डाला है, वह हिन्दी-साहित्य में अपूर्व वस्तु है।

आपने इसके लिखने में बड़ा परिश्रम किया है। और इतने वृहत्काय ग्रंथ का मूल्य भी प्रचार दृष्टि से आपने स्वल्प रक्खा है। यह बहुत ही अच्छा किया है। मुझे पूर्ण निश्चय है, हिन्दी-संसार में इसका बहुत आदर होगा।

(१४)

पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

(कलकत्ता, चै॰ सु॰ ११—१९९२)—

आपकी सटीक तुलसीकृत रामायण देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। सचमुच आपने बड़े परिश्रम और खोज के साथ इसकी रचना की है।

आपकी उट्टंकणायें और उद्भावनायें बड़े महत्व की हैं। कहीं-कहीं मतभेद होने पर भी मैं इसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। इस सफलता के लिये हार्दिक बधाई है।

(१५)

पंडित लोचनप्रसाद पाण्डेय

(बालपुर, बिलासपुर; १०-३-३६)—

आपने 'रामचरितमानस' की टीका ऐसी उत्तमता और सुन्दरता से करने तथा गुसाईंजी पर इतनी खोज पूर्ण मौलिक निबन्ध लिखने का अवकाश कब और कैसे प्राप्त कर लिया, मुझे तो यही चकित कर रहा है। मुझे आपसे पवित्र प्रतिस्पर्द्धा हो रही है। क्या आपको क्षति पहुँचाने की ? नहीं—ऐसे उदात्त, उच्च, महान, उदार एवं दिव्य साहित्य-सेवा में सतत रत रहने की !

आपका जीवन धन्य है। आपका लेखनी-धारण सार्थक है। मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र महाराज आपके हृदय में उस भक्ति-मणि का उदय करावें जो 'हरिजन' एवं हरिभक्तों का अनन्य ध्येय है।

(१६)

नालंदा (बिहार)—

टीका या मूल पुस्तक के पहले लगभग ३०० पृष्ठों की एक बहुमूल्य भूमिका है जिसमें भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से कवि पर प्रकाश की एक तीव्र रेखा दी गई है। संक्षेप में पुस्तक के साथ एक छोटी-सी आल्मारी है जिसमें पाठकों को तुलसीदास और उनकी अन्यान्य रचनाओं के सम्बन्ध में सभी ज्ञातव्य बातों का संकलन किया गया है, जो अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

रामायण के पात्रों का चरित्र-चित्रण भी अत्यन्त भाव-पूर्ण भाषा

में किया गया है। अँग्रेज़ी समालोचना की पद्धति से लिखा गया 'तुलसीदास का बाह्य-जगत और तुलसीदास का अन्तर्जगत' हमें बहुत पसन्द आया। भाषा में प्रवाह है और शैली में मनोरंजकता।

क्षेपक निकाल दिये गये हैं, यह अच्छा ही किया गया है। क्षेपकों के दूषित वातावरण से रामायण की रक्षा करना ही प्रत्येक तुलसी-भक्त का कर्तव्य है। छपाई, सफ़ाई बहुत सुन्दर। जितना मूल्य रखा है, उससे अधिक की पाठ्य सामग्री पाठकों को दी जा रही है, इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं। हम त्रिपाठीजी को उनकी सफलता के लिये बधाई देते हैं।

(१७)

विज्ञान (प्रयाग, सं० ६, पृष्ठ २७६)—

मानस-प्रेमियों के बड़े सौभाग्य से त्रिपाठीजी ने बड़े परिश्रम से शुद्ध मूलपाठ के साथ-साथ शुद्ध अन्वय-रूप उल्था और भूमिका-रूप में उसकी टीका छपवाकर हिन्दी-जगत् का बड़ा उपकार किया है। पाठ का यथार्थ शोध न होने से, एवं अनेक शब्दों का ठीक अर्थ न कर सकने से अबतक की टीकाएँ सन्तोषजनक नहीं हुई हैं। मानसपीयूष सर्वोत्तम है और सन्तोषदायक, परन्तु उसके ३२) देनेवाले कितने हैं? कम दामों की शुद्ध पाठ सहित सावधानी से की हुई टीका हमको अन्त में यही देखने में आयी है। इसमें 'भरनी', 'पतंग', 'किन' आदि अनेक शब्दों के ठीक अर्थ देकर और ठीक अन्वय करके मूल का अर्थ बड़ी सावधानी से किया गया है। मानस-प्रेमियों को पाँच रुपये में त्रिपाठीजी अपने अपूर्व परिश्रम का फल देते हैं, इसके लिये मानस-प्रेमी उनके अनुगृहीत होंगे।

त्रिपाठीजी स्वयं एक उत्कृष्ट कवि हैं। ऐसा अच्छा संस्करण

निकालने के लिये हम अपने परममित्र कवि-श्रेष्ठ त्रिपाठीजी को बधाई देते हैं।

आपकी विस्तृत भूमिका विद्वत्तापूर्ण है और बड़े अनुसंधान से लिखी गई है। मैं विद्वज्जनों से आग्रह करूँगा कि उसे अवश्य पढ़ें और उस पर विचार करें।

(१८)

प्रताप (कानपुर, २५ अगस्त, १९३६)—

पण्डित रामनरेश त्रिपाठी द्वारा लिखित इस टीका तथा इसकी भूमिका-खण्ड के अवलोकनमात्र से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वे किस लगन के साथ अपने उद्देश्य की पूर्ति की ओर अग्रसर हुये हैं। जैसा कि उन्होंने लिखा है, गोस्वामी तुलसीदास सम्बन्धी अबतक प्रायः सभी प्राप्य ग्रन्थों का अनुशीलन कर तथा उन स्थानों में जहाँ उनके सम्बन्ध में और जानकारी हो सकती थी पर्यटन कर इस टीका का आरम्भ किया। त्रिपाठीजी स्वयं उच्च श्रेणी के कवि हैं। आपका 'पथिक' और 'मिलन' हिन्दी-काव्य-ग्रन्थों में आदर की वस्तु है। कवि कवि को समझने में अन्य जनों की अपेक्षा अधिक समर्थ है। हमें हर्ष है कि त्रिपाठीजी ने अत्यन्त परिश्रम करके कवि की आत्मा तक पहुँचने का सफल प्रयास किया है। उसके भावों को विशेष महत्व देकर ही उन्होंने यह टीका की है।

मानस के प्रारम्भ में टीकाकार ने तुलसीदासजी के जीवन-चरित पर तथा उनकी कविता पर लगभग चार सौ पृष्ठों में प्रकाश डाला है। इस खंड में उन्होंने गोस्वामीजी की स्वकथित जीवनी, जो उनके काव्य-ग्रन्थों से प्राप्त हुई है, तथा जनश्रुति-संचित तथा कल्पना-प्रसूत जीवनी का संकलन किया है। इसके लिए भक्तमाल, दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता, शिवसिंह-सरोज, रानी कमलकुँवरि तथा बैजनाथदास

लिखित तुलसीदासजी का जीवन चरित्र, ग्रियर्सन लिखित नोट्स ऑन तुलसीदास, रघुबरदास लिखित तुलसी चरित्र, वेणीमाधवदास लिखित मूलगोसाईं चरित आदि अनेक ग्रंथों का आश्रय लिया गया है। इसी प्रकार उनके जीवन की अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में भी टीकाकार ने अनवरत परिश्रम करके लिखा है। रामचरितमानस के प्राचीन प्रतियों, टीकाओं तथा अनुवादों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें लिखकर गोस्वामी जी के अन्य ग्रन्थों पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार 'मानस' की टीका के साथ ही यह भूमिका-खंड सुवर्ण में सुगन्ध का मेल है। पं० रामनरेश त्रिपाठी अपनी इस विद्वत्तापूर्ण टीका तथा भूमिका-खंड के लिए सर्वथा बधाई के पात्र हैं। 'मानस'-प्रेमिकों को ऐसे उत्तम ग्रन्थ का आदर करना चाहिये। इसके विशाल आकार प्रकार तथा लगभग १६०० पृष्ठों के देखते हुए इसका मूल्य भी अधिक नहीं जान पड़ता।

(१६)

सैनिक (आगरा, ३१ मार्च, १९३६)—

श्रीयुत रामनरेश त्रिपाठी अपनी साहित्यिक-सेवाओं के लिए हिन्दी-संसार में प्रसिद्ध हैं। आपने रामचरितमा की एक टीका की है। यह टीका इस समय हमारे सामने है। इस टीका को हम उत्तम टीकाओं की श्रेणी में शुमार करते हैं। रामचरितमानस का हिन्दू-समाज में जो मान और आदर है, जितना साहित्यिक और सामाजिक सम्मान इस ग्रन्थ को अबतक प्राप्त हो चुका है, उतना दुनिया के किसी और समाज के किसी ग्रन्थ को मिला होगा, इसका ज्ञान अभीतक हमें नहीं है।

रामचरितमानस में जिस समाज की कल्पना की गई है, वह पूर्ण स्वस्थ और मानव-जीवन की प्रत्येक आवश्यकताओं की पूर्ति से परिपूर्ण है। रामायण की उत्तरोत्तर जितनी टीकायें निकलती हैं, उनमें

पहली टीकाओं से कुछ नया रूप, सुधार और विशेषता हो, तभी टीकाकार का श्रम सफल समझा जाता है। त्रिपाठीजी की इस टीका में मूल पाठ वही रक्खा गया है जो स्वयं तुलसीदासजी ने लिखा है। साथ ही टीका सरल और सर्व-साधारण के लिए पठनीय है। प्रारम्भ में भूमिका, गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र आदि तीन सौ पृष्ठों से अधिक की अन्य उपयोगी सामग्री है।

(२०)

नवशक्ति (पटना)—

हमें .खुशी है कि त्रिपाठीजी की टीका, हमारे ख़याल से, अबतक की टीकाओं में सर्वश्रेष्ठ कही जाने योग्य हुई है। इसमें आपकी विद्वत्ता का परिचय भली-भाँति मिलता है।

पुस्तक के आदि में ३०८ पृष्ठों की त्रिपाठीजी की लिखी भूमिका है, जो बहुत ही उपयोगी, महत्वपूर्ण और विद्वत्ता-युक्त है। इसमें टीकाकार ने गोसाईंजी की विस्तृत जीवनी ही नहीं दी, उनके जीवन और काव्य की आलोचना भी की है और गोसाईं जी की कविता के गुण-दोषों पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला है।

(२१)

श्रीवेंकटेश्वर (बम्बई, अप्रैल १०, १६३६)—

शुद्धपाठ और टीका दोनों ही की दृष्टि से यह रामायण हिन्दी में अब तक छपी हुई समस्त रामायणों से अधिक उत्तम प्रतीत होती है और इसके लिखने में टीकाकार ने जितने अनुसन्धान और खोज-बीन से काम लिया है कदाचित् एतत्पूर्व किसी भी टीकाकार ने इतना परिश्रम नहीं किया। इसमें रामायण के आरम्भ में एक पाण्डित्य-पूर्ण

भूमिका और "तुलसीदास और उनकी कविता" शीर्षक ३०८ पृष्ठ का सुविस्तृत लेख है, जिसमें गोस्वामी तुलसीदासजी की जीवनी के सम्बन्ध में ऐतिहासिक विवेचन बड़ी ही गवेषणा के साथ किया गया है। श्री० त्रिपाठीजी ने तुलसीदासजी का जन्म-स्थान राजापुर की बजाय सोरों माना है और इस सम्बन्ध में जो ऐतिहासिक प्रमाण दिये हैं, वे अकाट्य हैं। गोसाईंजी की जीवनी और रचनाओं को त्रिपाठीजी ने जिस दृष्टि-कोण से लिखा है, वैसा अबतक किसी भी लेखक ने लिखने का प्रयास नहीं किया था। यद्यपि रामायण एक ऐसा सर्व-विश्रुत और सुप्रचारित ग्रन्थ है कि इतने खोजबीन और अन्वेषण के साथ लिखी गई टीका में भी लोग त्रुटि निकाल सकते हैं, किन्तु अबतक की सुप्रचलित टीकाओं में त्रिपाठीजी ने जो त्रुटियाँ और भूलें दिखाई हैं, वे वास्तव में इतनी ज्वलन्त हैं कि उन्हें समझने और मानने में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता और यह आश्चर्य होता है कि इतने ख्याति-प्राप्त ग्रन्थ की टीकाओं में भी अभी ऐसी भद्दी भूलों का संशोधन क्यों नहीं हुआ।

स्थल-स्थल पर श्री० त्रिपाठीजी ने अनेक पाठान्तरों के शुद्ध रूप और अर्थ का निरूपण करते हुये इस टीका को अबतक की टीकाओं की अपेक्षा अधिक शुद्ध, सुपाठ्य और संग्रहणीय बना दिया है। आशा है, रामायण-प्रेमी विद्वन्मण्डली त्रिपाठीजी के इस परिश्रम की क़द्र करेगी और रामायण की इस अपेक्षाकृत शुद्ध टीका को मुक्त हृदय से अपनायेगी।

(२२)

The Hindu (Madras, Sunday, Nov. 15, 1936)—

"Ramcharit Manas", otherwise known as the Tulsi Ramayan, is the greatest and the most popular of the poetical works that Hindi language possesses. It is

at once a piece of literature and a book of scripture and is honoured and revered by the Hindus in North India as much as the Bible is in Christendom. The book is to be found in every house from cottage to palace and it is hardly possible to find a single man there, who does not read it and remember some of the popular stanzas which he can readily quote on suitable occasions. Very few people know anything about the Vedas and Sastras. To the great majority of them, this book serves all their spiritual needs.

Tulsidas wrote his works in a dialect of Hindi, popularly known as 'Avadhi' and spoken round about Oudh or Ajodhya. The book has gone through numerous editions, and many commentaries have been published of which the present one is the latest. Pandit Ramnaresh Tripathi, the commentator, is a reputed Hindi scholor. With a view to making the edition authoritative, the learned Pandit has taken great pains to compare the work with various old manuscripts, some of which are claimed to be in the poet's own handwriting. Four different lithograph specimens of the poet's handwriting, reproduced from original manuscripts are printed in the book. The commentary is excellent. Written in chaste, modern Hindi, it is simple enough to be understood by even a beginner in Hindi. In certain places, the commentator has succeeded in bringing out the inner meaning of the stanzas with a measure of success which few

other commentators have achieved.

The book is printed in bold and clear type. The first three hundred pages are devoted to the life of the poet and a general criticism of the Ramayana and his other works, in which the author discusses at length the merits of the various works. He has collected some very valuable information about the life of the poet from various sources and included them in the preface. Three photos of the poet are also given, reproduced from ancient paintings. The author also makes a geographical survey of the places of importance mentioned in the Tulsi Ramayan. The preface on the whole is very interesting and instructive and forms a book by itself.

At the end of the book an exhaustive glossary of names and explanations of the allusions in the book has been a added. The author deserves the thanks of all the Hindi-knowing public for bringing out this edition of such a useful and popular book.

Avadhanandan.

(२३)

सुरीनाम (डच-गायना, दक्खिणी अमेरिका) से आई हुई एक मुसलमान सज्जन की सम्मति—

श्रीयुत मान्यवर महाशय पंडित रामनरेश त्रिपाठीजी साहब,

ज़ाद इनायतहू बाद तसलीम के गुज़ारिश है कि आपका रामायण पढ़कर निहायत ख़ुशी हासिल हुई; जो लिखने से बाहर है।

टीका मैंने देखी; धन्य है आपकी तीक्ष्ण बुद्धि को ! अगर मेरे सहस्रमुख शेषनाँग के सदृश होते, तौ भी मैं आपकी सर्वोत्तम टीका की तारीफ़ न कर सकता। मैं ईश्वर से आपके चिरायु होने की हृदय से प्रार्थना करता हूँ।

मुन्शी रहमानखाँ
१३-१०-३६

(२४)

इटली से प्राप्त डा० ई० जी० कारपानी, पी० एच-डी० **की सम्मति—**

Bologna
(Italy)
4-12-36

Dear Mr. Tripathi,

I will place this valuable book in the library of the Rappresentanza Scientifica Italiana of the Indian Research Institute. A notice of it will also appear in the first number of the "Rivista di Indologia"

Yours very sincerely
(Sd.) E. G. Carpani

रामचरितमानस

हिन्दी-अनुवाद-सहित
(आकार छोटा)

बड़े भारी पोथे को रखने और साथ ले जाने में रामचरितमानस के

प्रेमियों को बड़ी दिक़्क़त पड़ती है। यह देखकर हमने छोटे आकार में सटीक 'मानस' का एक शुद्ध संस्करण निकाला है। छपाई-सफ़ाई सुन्दर; कपड़े की रंगीन जिल्द; दाम केवल तीन रुपये।

तुलसीदास के बारह ग्रन्थ

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

रामचरितमानस के सिवा तुलसीदास के शेष बारह ग्रन्थों का भी हम एक शुद्ध संस्करण, एक ही जिल्द में, प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें निम्नलिखित ग्रन्थ हैं।—

१—वैराग्य-संदीपिनी
२—कवितावली
३—दोहावली
४—तुलसी-सतसई
५—बरवै-रामायण
६—रामलला-नहछू
७—गीतावली
८—रामाज्ञा-प्रश्न
९—जानकी-मंगल
१०—श्रीकृष्ण-गीतावली
११—पार्वती-मंगल
१२—विनय-पत्रिका

छपाई-सफ़ाई सुन्दर; काग़ज़ बढ़िया; कपड़े की सुवर्णांकित जिल्द; मूल्य केवल तीन रुपये। पुस्तक प्रेस में है।

तुलसीदास और उनकी कविता

तुलसीदास के सम्बन्ध में जितने ज्ञातव्य विषय हैं, इस पुस्तक में प्रायः सब आ गये हैं। इस एक पुस्तक को हृदयंगम करके तुलसीदास का विराट् रूप सहज में देखा जा सकता है। पुस्तक की विषय-सूची

जो आगे दी जा रही है, देखकर इसकी उपयोगिता का अनुमान लगाया जा सकता है।

विषय-सूची

मराठी-अनुवाद
गुजराती टीका
अँग्रेजी टीका

रामचरितमानस की हिन्दी-
टीकायें

ज्ञानी संतसिंह (पंजाबीजी) की टीका
श्री बैजनाथजी कूर्मवंशी की टीका
पंडित शिवलाल पाठक की टीका
श्री देवतीर्थ (काष्ठजिह्वा) स्वामी की टीका
श्री मन्महाराज द्विजराज काशिराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह बहादुर (जी० सी०एस० आई०) की टीका।
परमहंस श्री सीतारामीय हरिहरप्रसादजी की टीका
मुन्शी शुकदेवलाल (मैनपुरी-निवासी) की टीका
महन्त श्री रामचरणदासजी (अयोध्या-निवासी) की टीका
पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र की टीका
पंडित रामेश्वर भट्ट की टीका
श्री रामप्रसादशरणकीटीका
पंडित विनायकरावकी टीका
बाबू श्यामसुन्दरदास की टीका
पंडित महावीरप्रसाद मालवीय की टीका
श्रीजनकसुता-शरण शीतला-सहाय सावंत की टीका

७—रामचरितमानस का भूगोल

८—मानस-मधु

९—तुलसीदास की अन्य रचनायें

१०—तुलसीदास की रचनाओं का काल-क्रम—

वैराग्य-संदीपनी
कवितावली
दोहावली
तुलसी-सतसई
बरवै-रामायण
रामलला-नहछू
गीतावली
रामाज्ञा-प्रश्न
जानकी-मंगल
श्रीकृष्ण-गीतावली
रामचरितमानस

दूध-जैसे सफेद चिकने काग़ज़ पर, बिल्कुल नवीन और सुन्दर टाइपों में छपी हुई, इस पुस्तक का मूल्य तीन रुपये। पुस्तक पर रंगीन कपड़े की दर्शनीय जिल्द है।

इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक शिक्षित हिन्दू के घर में अवश्य होनी चाहिये। मित्रों, पुत्र-पुत्रियों, बहुओं और विद्यार्थियों को यह पुस्तक उपहार में देनी चाहिये। कोई पुस्तकालय इस पुस्तक से रहित न होना चाहिये।

काश्मीर

लेखक—श्रीगोपाल नेवटिया

इस पुस्तक में काश्मीर के हिम-पर्वतों, झरनों, नदी-नालों, वन-उपवनों, मनोहर घाटियों और वहाँ के सुन्दर स्त्री-पुरुषों का आँखों-देखा वर्णन ऐसी सजीव भाषा में किया गया है, कि पढ़ते समय काश्मीर आँखों के आगे आजाता है।

हिन्दी में काश्मीर-विषयक यह सबसे पहली पुस्तक है। इसमें १४ रङ्गीन और १६१ सादे चित्र भी हैं। छपाई-सफ़ाई काश्मीर ही की तरह सुन्दर है। रङ्गीन कपड़े की सुन्दर सुवर्णाङ्कित जिल्द से अलंकृत इस पुस्तक का मूल्य केवल पाँच रुपये। डाक-व्यय ।||=)

सम्मतियाँ

(१)

The Leader—

The book has been very well written by the author who made a tour in Kashmir with a party of friends. *It is very interesting reading and would be found very useful* by those who have

the good fortune to pay a visit to and spend some time and money in tour in the 'garden of India' or 'Heaven on earth'. The author has given a chapter on the informations to the travellers going to Kashmir *which adds to the usefulness of the book.* It contains 175 coloured and plain plates. The book will be found interesting even by those who, without visiting this portion of India, want to have an idea as to what Kashmir is. It is well printed, got up and bound.

(२)

The Pioneer—

Hindi has been enriched by the addition of a book on Kashmir, which it lacked for so long. *This book will admirably fill the want. It gives all the particulars one would like to have.* The book is neatly printed and contains a large number of coloured and photographic illustrations.

(३)

भारत—

सिद्ध-हस्त लेखक ने इसमें काश्मीर-सम्बन्धी जानने योग्य प्रायः सभी बातों का समावेश कर दिया है और साथ ही पौने दो सौ के लगभग रंगीन और सादे चित्र भी दे दिये हैं, जिनसे पुस्तक की शोभा और उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। जैसा सुन्दर इसका विषय है, वैसी ही कवित्व-पूर्ण इसकी भाषा है। हिन्दी में ऐसी सुन्दर पुस्तक लिखने

के लिये हम नेवटियाजी को बधाई देते हैं। पुस्तक का विषय ही नहीं, उसकी बाहरी सज-धज भी बड़ी मनोहर है। प्रत्येक लाइब्रेरी और प्रत्येक यात्रा-प्रेमी गृहस्थ के घर में यह पुस्तक होनी चाहिये।

घर का वैद्य

लेखक—अत्रिदेव गुप्त, विद्यालंकार

हिन्दी में अपूर्व मौलिक ग्रन्थ

इसमें मनुष्य की उत्पत्ति से प्रारम्भ होनेवाले रोगों से लेकर मृत्यु तक के सब रोगों का वर्णन बड़े ही सरल ढंग से किया गया है। देशी, यूनानी, अँग्रेज़ी तीनों प्रकार की चिकित्सा-प्रणालियाँ इसमें दी गई हैं। प्रत्येक रोग के लिये सैकड़ों चुटकुले दिये गये हैं, जिनकी क़ीमत ४, ५ पैसे से अधिक न होगी। बड़े शहरों में रहनेवालों के लिये शास्त्रीय योग दे दिये गये हैं। जब चाहें बाज़ार से बना बनाया ले लें। इस प्रकार से यह पुस्तक अमीर-ग़रीब, शहराती और देहाती सब के काम की है। हिन्दी में इस विषय की एक भी पुस्तक नहीं थी।

इस एक ही पुस्तक से आप सैकड़ों रुपये की बचत कर सकते हैं। यदि बचत की आवश्यकता न हो, तो भी रोग और औषधियों के ज्ञान से आप अपने शरीर को तो स्वस्थ रख ही सकते हैं। दाम केवल १२)। डाक-व्यय १।=)

क्षय-रोग

प्रथम भाग

लेखक—डा० शंकरलाल गुप्त, एम० बी० बी० एस०

यह क्षय-रोग पर एक बिलकुल नया खोज-पूर्ण, सरल और उपादेय

ग्रन्थ है। इस भाग में रोग के कारण, उत्पत्ति, प्रसार, शरीर-विकार, लक्षण और परीक्षा-विधियों का विस्तृत वर्णन है। वैद्यों, चिकित्सकों, आयुर्वेद के विद्यार्थियों तथा गृहस्थों के लिये यह बड़े काम की चीज़ है। अठपेजी आकार के बड़े-बड़े ४३२ पृष्ठों में ११५ रंगीन तथा सादे चित्रों के साथ सुन्दर छपी हुई पुस्तक का मूल्य केवल ६) है। डाक-व्यय १=)।

सम्मतियाँ

(१)

कर्मवीर (खँडवा)—

इस पुस्तक में डाक्टर शंकरलाल गुप्त ने सभी व्यावहारिक तथा नूतन से नूतन खोजों का समावेश किया है जो उनके स्वत: के अनुभवों से मिलकर कहीं अधिक सुगम, स्पष्ट तथा लाभकारी हो गए हैं। पुस्तक में २२ परिच्छेद हैं। अपने विषय का प्रतिपादन इन शीर्षकों के भीतर करते हुए लेखक ने अपनी सर्वमान्य विद्या का खासा परिचय दिया है। विवादास्पद विषयों को सरल, ग्राह्य तथा उपयोगी बनाने के लिए लेखक ने अनेकों चित्र दिये हैं। मामूली बोलचाल की भाषा में यह पुस्तक लिखी गई है जिससे साधारण हिन्दी का ज्ञान रखने-वाला मनुष्य भी इस पुस्तक को पढ़कर क्षय-रोग से अपना बचाव कर सकता है और क्षय-रोगी की प्राथमिक चिकित्सा भी कर सकता है। पुस्तक के अन्त में शब्दानुक्रमणिका देकर लेखक ने पाठकों की एक बड़ी ज़रूरत पूरी कर दी है।

हमारी समझ के अनुसार हिन्दी क्या अँगरेज़ी में भी ऐसी स्वतंत्र पुस्तक क्षय-रोग पर देखने में नहीं आई। हमारा दावा है कि भारत की किसी भी भाषा में क्षय-रोग पर ऐसी अमूल्य पुस्तक नहीं। ऐसे सफल ग्रन्थ के लिए हम भारत में लाखों क्षयी तथा अज्ञात

जनता और मेडिकल प्रोफेशन की ओर से लेखक को धन्यवाद देते हैं।

(२)

जयाजी-प्रताप (ग्वालियर)—

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य विशेषकर आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र-सम्बन्धी साहित्य की कमी बताई जाती है। परन्तु हर्ष का विषय है कि विद्वान् तथा अनुभवी व्यक्तियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट होने लगा है। प्रस्तुत पुस्तक की गणना उन ग्रन्थों में आसानी से हो सकती है जिन पर हिन्दी के वैज्ञानिक साहित्य को गर्व होना चाहिए।

(३)

डाक्टर कालीसहाय निगम, एम० डी०, एफ० आर० सी० एस० डी० टी० एम०, प्रोफेसर, मेडिकल कालिज, (लखनऊ)—

क्षय-रोग, प्रथम भाग, लिखने के कठिन कार्य के लिए डाक्टर शंकरलाल गुप्त बधाई के पात्र हैं। उन्होंने विशद रूप से और सप्रमाण लिखा है। लिखने की शैली रोचक है जिससे वैज्ञानिक वर्णन आसानी से समझ में आ जाता है। चित्रों का बाहुल्य है और वे भली प्रकार चुने गए हैं।

(४)

Dr. Triloki Nath Verma, B. Sc., M. B. B. S.; F. R. F. P. G. D. T. M. L. M., **Civil Surgeon—**

The book is, thoroughly upto date and embodies the most recent views on Tuberculosis. The style is simply beautiful. As the

history of the development of the subject is incorporated the book provides a most interesting reading in places. The language is terse to the point and scientific.

The book is really a first class treatise on the subject, as a matter of fact the only standard work on Tuberculosis in Hindi written on modern lines.

(५)

Dr. Ishwari Prasad, M. A., D. Litt.,
(Allahabad University)—

I have read Dr. Shankerlal's book on Tuberculosis in Hindi with great interest. The author's able exposition and scientific handling of a difficult subject in popular language does him great credit. He has avoided difficult technicalities of the subject and has given us a treatise which will prove useful both to the medical practitioner as well as the layman.

(६)

The Hindustan Times, (Delhi)—

The whole book is admirably lucid and well balanced presentation of the subject and the matter throughout is arranged in a logical way with numerous sub-headings and italics.

While the style is simple, the language everywhere is precise and scientific. A remarkable feature of the book is that a special chapter has been devoted to the incidence of tuberculosis in India with mortality tables based on scientific data. The relationship of the disease with the various social evils has been clearly pointed out and discussed. The book is pleasantly supplied with illustration of all kinds including coloured plates and numerous excellent radiograms. The get-up too is attractive and the price moderate. This book deserves to be widely read by all the Hindi knowing people.

घाघ और भड्डरी

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

घाघ और भड्डरी युक्तप्रान्त, बिहार और मध्यप्रदेश तथा राजपूताने के कुछ हिस्से के भी किसानों के कवि हैं। इनकी कविता में किसानों के काम आनेवाले प्रायः सभी विषय आगये हैं और नीति के वचन तो ऐसे हैं, जो अनुभव से भरे हुये हैं और प्रत्येक गृहस्थ के काम के हैं। त्रिपाठीजी ने बहुत भ्रमण करके, बड़े ही परिश्रम से यह संग्रह तैयार किया है और सब के नीचे बड़ी ही सरल हिन्दी में अर्थ भी दे दिया है। इसे हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने प्रकाशित किया है। पुस्तक सजिल्द है और छपाई-सफ़ाई भी बढ़िया है। प्रत्येक किसान के घर में इस पुस्तक की ज़रूरत है। दाम तीन रुपये; डाक-व्यय ।॥=)।

सम्मति

(१)

पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी—

इन कहावतों का संग्रह प्रकाशित करके आपने बड़ा काम किया। ये तो हम देहातियों के लिये वेद-वाक्य हैं। आपने बहुत परिश्रम करके इन रत्नों को पुस्तक-रूपी सन्दूक में सुरक्षित रख दिया।

चिंतामणि

संग्रहकर्त्ता—रामनरेश त्रिपाठी

संत-महात्माओं के चुने हुये भजनों का संग्रह। इसकी एक प्रति प्रत्येक हिन्दू की जेब में रहनी चाहिये। पॉकेट-साइज़ में इस पुस्तक की छपाई-सफ़ाई बड़ी ही आकर्षक है। दाम पाँच आने; डाक-व्यय ॥)

कुल-लक्ष्मी

स्त्रियों के लिये यह बड़े ही काम की पुस्तक है। ऐसी उपयोगी पुस्तक स्त्रियों के लिये अभीतक हिन्दी-भाषा में दूसरी नहीं निकली। इसमें इन विषयों का वर्णन है।—

स्त्रियों के गुण—सौन्दर्य की सृष्टि, लज्जा, नम्रता, गम्भीरता, सरलता, सन्तोष, श्रमशीलता, स्नेहशीलता, अतिथि-सेवा, देव-सेवा, सेवा-शुश्रूषा, सुजनता, कर्तव्य-ज्ञान, सतीत्व।

स्त्रियों के दोष—आलस्य, विलासिता, स्वेच्छाचारिता, अव्यवस्था, कलह, दूसरे की निन्दा और ईर्ष्या-द्वेष, अभिमान और अहंकार, स्वास्थ्य

से लापरवाही, हास-परिहास और व्यर्थ वार्तालाप, असहनशीलता, अपव्यय।

पति के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य। सास-ससुर के प्रति बहू का कर्तव्य। अन्यान्य आत्मीयों के प्रति स्त्री का कर्तव्य। जेठ, जेठानी, देवरानी और ननद इत्यादि, नौकर नौकरानी आदि।

रोज़ के काम—सवेरे का काम, रसोई, पान बनाना, स्वच्छता और सुव्यवस्था, लिखना-पढ़ना और दस्तकारी, रोज़ाना हिसाब, सेवा-शुश्रूषा व्रत-उपवास, पढ़ने योग्य पुस्तकें, मितव्यय।

पौराणिक नीति-कथा—लक्ष्मी और रुक्मिणी का संवाद, सुमना और शांडिली का संवाद, पार्वती का स्त्रीधर्म-वर्णन। द्रौपदी और सत्यभामा का संवाद।

मनोहर कवरवाली बढ़िया छपी हुई पुस्तक का दाम केवल आठ आना। उपहार में देने योग्य पुस्तक है; डाक-व्यय ॥)।

दम्पति-सुहृद्

स्वर्गीय सतीशचन्द्र चक्रवर्त्ती-लिखित बँगला-पुस्तक का हिन्दी-अनुवाद। यह पुस्तक स्त्री-पुरुष दोनों के लिये बड़े काम की है। प्रत्येक पढ़े लिखे नर-नारी को एक बार इस पुस्तक का पाठ कर जाना चाहिये। इसमें इन विषयों का वर्णन है :—

दम्पति, दाम्पत्यप्रेम, रूपतृष्णा, संसार और गृहकार्य, सन्तान-पालन, चरित्र-गठन, नाना कथा, विलासिता, दाम्पत्य-कलह, क्षमा-गुण, अवस्था, मितव्ययता, दान, भिक्षा, साहाय्य-प्रार्थना, कृतज्ञता, पारिवारिक सम्मान, रहस्य-रक्षा, विविधि। पुस्तक सजिल्द है। दाम आठ आना; डाक-व्यय ॥)।

सद्गुरु-रहस्य

लेखक—कुमार कौशलेन्द्रप्रताप साही, राय बहादुर,
(दिअराराज, सुलतानपुर)

इस पुस्तक को आप एक बार पढ़ डालिये, अपने पुत्र-पुत्रियों को पुरस्कार और मित्रों को उपहार में दीजिये, आपका परम कल्याण होगा। आप भगवान् के चरणों की उस शीतल छाया में जाकर खड़े होंगे जहाँ संसार के दुःख-दावानल की आँच नहीं पहुँचती। बीसवीं सदी के घोर नास्तिकता-पूर्ण वातावरण में तो इस पुस्तक का प्रचार घर-घर होना चाहिये। यह अवध के एक राजवंशीय नर-रत्न भगवद्भक्त के दस वर्षों के गंभीर मनन का फल है। इसमें काल-कर्म, माया और प्रेम तथा ज्ञान-विज्ञान की परीक्षा करके तथा वैज्ञानिक सचाइयों के द्वारा भी भक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध की गई है। विद्वान् लेखक ने भक्त कवियों के मर्मस्पर्शी पदों, दोहों और विविध छन्दों से भाषा में ऐसा प्राण डाल दिया है कि पढ़ते-पढ़ते मन लहालोट हो जाता है। हिन्दी में अभीतक ऐसी अच्छी पुस्तक नहीं निकली। यह पुस्तक इतनी सुन्दरता से छपाई गई है कि देखकर नेत्रों का जीवन सफल हो जाता है। पुस्तक में आठ चित्र भी हैं। कपड़े की मनोहर जिल्द लगी है। सद्गुरु-रहस्य आपके हृदय-मन्दिर का दीपक, वाणी का अलंकार, हाथों का भूषण और आलमारी का शृङ्गार है। दाम लागत-मात्र १); डाक-व्यय ।||=)।

अयोध्या-कांड, सटीक

टीकाकार—रामनरेश त्रिपाठी

प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के अनुसार मूल पाठ ठीक करके यह अयोध्या-कांड टीका-सहित हमने प्रकाशित किया है। टीका इसकी ऐसी

सरल है कि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी चौपाइयों का अर्थ आसानी से समझ लेते हैं। हिन्दी-मन्दिर से प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों की छपाई-सफ़ाई तो प्रसिद्ध ही है, इस पर भी कपड़े की जिल्द वाली साढ़े तीन सौ पृष्ठों की पुस्तक का दाम केवल बारह आना रक्खा गया है। इतनी सस्ती पुस्तक हिन्दी में कोई नहीं। हिन्दुओं के घर-घर में रामायण का प्रचार होने के लिये ही हमने इतना सस्ता दाम रक्खा है। आशा है, हमारे हिन्दू-धर्माभिमानी पाठक इसे हाथोंहाथ लेंगे। डाक-व्यय ||=)।

हिन्दुओं के व्रत और त्योहार

लेखक—कुँवर कन्हैयाजू

हिन्दी में अपने विषय की यह पहली पुस्तक है, जिसमें हिन्दुओं के प्रचलित व्रतों और त्योहारों का खुलासा वर्णन दिया गया है। प्रत्येक व्रत के साथ जो कथायें प्रचलित हैं, वे भी लिख दी गई हैं। भाषा ऐसी सरल है कि साधारण पढ़ी-लिखी कन्यायें और बहुयें भी इसे अच्छी तरह समझकर लाभ उठा सकती हैं। यह पुस्तक प्रत्येक हिन्दू-परिवार में रहनी चाहिये। कन्याओं, बहुओं और बहनों को यह पुस्तक उपहार में देनी चाहिये। उपहार के लिये ही हमने यह पुस्तक बड़े सज-धज से छपाई है। जिल्द भी बहुत सुन्दर लगा दिया है। फिर भी दाम केवल दो रुपये; डाक-व्यय ||=)।

अँग्रेज़ी-शिष्टाचार

(English Etiquette)

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

अँग्रेज़ी समाज की रहन-सहन, चाल-ढाल, बोली-बानी, रस्म-रिवाज, खान-पान, रङ्ग-ढङ्ग, तौर-तरीक़ा, उठ-बैठ, लोकाचार, तहज़ीब, आमोद-

प्रमोद आदि का वर्णन इस पुस्तक में है। संसार की स्वतंत्र जातियों के बराबर बैठने का हौसला रखनेवाले भारतीयों को प्रत्येक समाज के क़ायदे-क़ानून की जानकारी बहुत ज़रूरी है। जो लोग समाज में जाने-आने के नियम नहीं जानते, वे असभ्य गिने जाते हैं, और सभ्य लोगों की नज़रों से गिर जाते हैं। इस पुस्तक-द्वारा बिना विलायत गये ही अँग्रेज़ों की रीति-भाँति का ज्ञान हो जाता है। पुस्तक सजिल्द है; मूल्य २); डाक-व्यय ॥=)।

सम्मति

(१)

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०—

भारत में स्वराज्य-स्थापना शीघ्र ही होगी। उस समय देशी और विदेशी आदमियों का सामाजिक सम्पर्क अवश्य बढ़ जायगा। उस समय शिष्टाचार के ज्ञान और शिष्ट आचरण की आवश्यकता और बढ़ जायगी। इसलिये मैं प्रस्तुत पुस्तक का स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि हिन्दी भाषा-भाषी उससे अवश्य लाभ उठावें।

हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में हिन्दी का एक हज़ार वर्षों का इतिहास बड़ी खोज से लिखा गया है। दाम छः आने; डाक-व्यय ॥)।

सुकवि-कौमुदी

सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी के पुराने और नये सुप्रसिद्ध कवियों की चुनी हुई कविताओं का संग्रह कवियों के साधारण परिचय-सहित इस पुस्तक में दिया गया है। हिन्दी-पद्य-साहित्य की साधारण जानकारी के लिये यह पुस्तक बड़ी ही उपयोगी है। मूल्य बारह आने। डाक-व्यय ॥)।

नीति-शिक्षावली

संग्रहकर्त्ता—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें नीति के उत्तम श्लोकों का संग्रह है। हिन्दी में अर्थ भी लिख दिये गये हैं। ये श्लोक सब को कंठस्थ रखने चाहिये। बच्चों को बालक-पन ही से इन्हें याद कराते रहना चाहिये। दाम आठ आने; (प्रेस में)।

कौन जागता है ?

(नाटक)

अनुवादक—रामनरेश त्रिपाठी

श्रीयुक्त वी० एन० मेहता, I. C. S., जो युक्तप्रांत के कई ज़िलों में कलक्टर और कमिश्नर रह चुके हैं, बड़े विद्वान् पुरुष हैं। वे कई भाषाओं के बड़े मार्मिक जानकर तो हुई हैं, प्रसिद्ध लेखक और नाटककार भी हैं। उन्होंने गुजराती में 'कोजाग्रि' नाम से एक नाटक लिखा है, जिसका 'प्लाट' बड़ा सुन्दर और उपदेश-प्रद है। मेहता साहब ने उसमें मानव-स्वभाव का जैसा

सुन्दर चित्रण किया है, उससे उनकी बहुज्ञता और बहुदर्शिता का परिचय मिलता है। प्रस्तुत पुस्तक उसी गुजराती पुस्तक का अनुवाद है। अनुवाद में भाषा की सरलता और भावों की गम्भीरता क़ायम रखने का ध्यान रक्खा गया है। काग़ज़, छपाई-सफ़ाई बहुत बढ़िया। दाम आठ आने; डाक-व्यय ।।)।

ग़ज़ल-संग्रह

संग्रहकर्त्ता—लाल वीरेन्द्रप्रताप साही

इस पुस्तक में उर्दू के १०० सुप्रसिद्ध शायरों की ६०० ग़ज़लें हैं। ग़ज़लों का ऐसा सुन्दर और बड़ा संग्रह हिन्दी में दूसरा नहीं है। मूल्य केवल २।।); डाक-व्यय ।।=)।

युरोप की कहानियाँ

अनुवादक—श्रीगोपाल नेवटिया

युरोप में बड़े ही प्रभावशाली कहानी-लेखक हैं और पढ़नेवाले भी करोड़ों हैं। हमने इस पुस्तक में निम्नलिखित देशों के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखकों की चुनी हुई कहानियों का सुन्दर हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है।

रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, स्पेन, बेलजियम, डेनमार्क, नारवे, स्वीडन, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, जुगोस्लोवेकिया, हंगेरी, रूमानिया, बलगेरिया, ईडिश आदि।

इन कहानियों को पढ़कर इस देश के कहानी-लेखकों को देखना चाहिये कि मनोभावों का चित्रण कैसे किया जाता है। छपाई-सफ़ाई सर्वोत्तम। पुस्तक सजिल्द। दाम ढाई रुपये; डाक-व्यय ।।=)।

बीस कहानियाँ

सम्पादक—रामचन्द्र टंडन, एम० ए०, एल-एल० बी०

हिन्दी के बीस सर्वोत्तम कहानी-लेखकों की एक-एक चुनी हुई कहानियों का संग्रह। आजतक हिन्दी में इस प्रकार की कहानियों का सुन्दर संग्रह कोई नहीं था। कहानियाँ ऐसे समय-क्रम से रक्खी गई हैं कि इनसे हिन्दी में कहानी की कला के क्रम-विकास का भी पता चलता है। दाम दो रुपया; डाक-व्यय ॥=)।

हिमानी

कवि—श्रीशान्तिप्रिय द्विवेदी

इस पुस्तक में श्रीशान्तिप्रियजी की फुटकर चुनी हुई कविताओं का संग्रह है। छपाई बहुत ही उत्तम। मूल्य केवल ॥); डाक-व्यय ॥)।

(१)

Roy's Weekly—

This small collection of Hindi poems by a young poet is sure to find a welcome among the readers of the language. Shri Shantipriya Dvivedi is already well-known for his earlier volume Nirava. He is a representative of the newer school of Hindi poetry. Some of the poems are beautiful lyrics, and show a true delicacy of vision.

(२)

श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०—

मुझे प्रसन्नता है कि 'हिमानी' के कवि श्रीशांतिप्रियजी में कविता में सफलता लानेवाली विशेषता पर्याप्तरूप में विद्यमान है। इसी से उनकी रचनाओं में एक प्रकार का आकर्षण और एक प्रकार की नवीनता है। उनमें वह संगीत भी है, जो गीति-काव्य का प्राण है और वह प्राञ्जल मधुर भाषा भी, जो उसका आधार है। मैं उन्हीं के शब्दों को

"बह जीवन रे शाश्वत गति है
शाश्वत गति ही है जीवन
बह बह ऋजु कुञ्चित गतियों में
पा जाता मन निज साधन"

दुहरा कर आशा करती हूँ कि उनका काव्य-प्रवाह भी ऋजु और कुञ्चित गतियों में बह-बहकर अपने मार्ग को सुगम और कूलों को उर्वर बनाता चलेगा।

साइज़ भी बहुत छोटा रक्खा गया है। सारी किताब नये टाइपों में छापी गई है। मूल्य केवल १॥); डाक-व्यय ॥)।

रत्ना

कवि—कुमार सोमेश्वरसिंह, B. A., L-L. B.

इस पुस्तक में कुमारजी की चुनी हुई फुटकर कविताओं का संग्रह है। छपाई-सफ़ाई बहुत बढ़िया। दाम केवल ॥J; डाक-व्यय ॥)।

तूणीर

लेखक—श्रीदेवदूत

तूणीर गद्य-गीतों का एक मनोहर संग्रह है। इस में अन्तर्जगत् पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। इसमें सुन्दर शब्दों, मनोहर वाक्यों. और मधुर वर्णन-शैली में अन्तर्जगत् की बहुत-सी भावनायें चित्रित की गई हैं। हिन्दी में इस तरह की पुस्तकें दो ही चार हैं। हिन्दी के प्रत्येक पाठक को ऐसी सुन्दर पुस्तक का रसास्वादन करना चाहिये। मूल्य ॥); डाक-व्यय ॥)।

सम्मतियाँ

(१)

The Hindu (Madras)—

Devadutji, the author of this work is well-known to the Hindi world through his earlier book "Kumar Hridaya k~ Uchchhwas". In the present volume he gives further evidence of his literary powers. The book, which is a collection

of a number of prosepoems, depicts the varying moods of human passions and emotions. The pieces are written in a crisp and simple style, whose mellifluousness and soft imagery make a direct appeal to the readers' heart. The book is sure to be a valuable addition to one's Hindi library.

(२)

प्रताप (कानपुर, २३, सितम्बर, १६३४) —

इसमें जगह-जगह कल्पना की सुन्दरता, भावों की मनोहरता और भाषा की मधुरता लहलहाती है। वर्णन-शैली बहुत सरस और प्रभावोत्पादक है। पुस्तक के प्रस्तावना-लेखक पंडित रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में "इसमें से निकले हुए तीर सहृदय रसिकों के हृदय में चुभकर प्रेम की पीड़ा, विरह की वेदना, आनन्द का उन्माद, शाश्वत-सुख की स्पृहा और जीवन के अन्धकार-मय पथ में प्रेम का प्रकाश उत्पन्न करते हैं।" ऐसी सुन्दर, सरस और स्फूर्तिदायक रचना के लिये वास्तव में श्रीदेवदूतजी बधाई के पात्र हैं।

(३)

कर्मवीर (खँडवा, ४-८-३४)—

'तूणीर' के लेखक देवदूतजी अपने उद्योग में सफल हुए हैं। आखें लिखती-सी, उनकी अँगुलियाँ बोलती-सी मालूम होती हैं।

नवीन युग के युवकों की तो यह पास रखने योग्य अपनी चीज़ है।

(४)

स्वराज्य (खँडवा, २१-१-३४)—

देवदूतजी के अनुभूति-मय गद्य-गीत सचमुच बहुत सुन्दर हैं; उनमें कविता का स्वाद आता है। उनमें आध्यात्मिकता है, जो सर-

सता से ओतप्रोत है। जीवन का सत्य पंक्ति-पंक्ति में उभर आया है।

(५)

अर्जुन (दिल्ली, ६—१२—३४)—

"तूणीर मानस-जगत का एक छोटा-सा किन्तु रमणीय उद्यान है, जिसकी विचार-वीथियों पर कोई सहृदय पथिक परिभ्रमण करे तो उसे स्थान-स्थान पर कल्पना की ललित लतायें लहलहाती मिलेंगी, भावों के मनोहर पुष्प अपनी मधुर मुसकान से चित्त को चुराते हुए मिलेंगे, वर्णन-शैली का शीतल, मन्द और सुरभित समीर हृदय को शान्ति, तृप्ति और आनन्द वितरण करता हुआ मिलेगा, भाषा की सरसता का स्रोत मस्तिष्क को तर करता हुआ मिलेगा, और मनुष्य के मधुर जीवन का सुन्दर पथ अन्तस्तल के नेत्रों की सीमा में होगा।"—पुस्तक की प्रस्तावना में लिखी श्रीरामनरेश त्रिपाठी की ये बातें जब हमने पढ़ीं तो हमें विश्वास नहीं हुआ, खयाल हुआ कि बहुत अतिशयोक्ति से काम लिया गया है; परन्तु जब तूणीर के गीतों पर दृष्टिपात किया, तो मानना पड़ा कि सचमुच 'कवि' ने 'कवि' के अन्तस्तल को समझा है और बहुतांश में ठीक लिखा है।

सुदामा-चरित

गद्यकार—रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी में सुप्रसिद्ध कवि नरोत्तमदास का सुदामा-चरित अपने विषय का एक ही और उच्च कोटि की कविता के सब गुणों से अलंकृत काव्य है। उसका सरल और परिमार्जित हिन्दी में मूल पद्य के साथ यह गद्यानुवाद है। परीक्षाओं में भी यह पुस्तक रक्खी जाती है। परीक्षार्थियों को इससे बड़ी ही सहायता मिल सकती है। छपाई-सफ़ाई मनोहर; दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

पार्वती-मंगल

गद्यकार—रामनरेश त्रिपाठी

पार्वती-मङ्गल गोस्वामी तुलसीदास की अमर रचना है। इस पुस्तक में उसका मूल और उसकी प्रत्येक पंक्ति का गद्यानुवाद, बड़ी ही सरल और परिमार्जित हिन्दी में, दिया गया है। यह पुस्तक परीक्षार्थियों के बड़े काम की है। छपाई-सफ़ाई बढ़िया; मूल्य ।); डाक-व्यय ॥)।

शिवा-बावनी

गद्यकार—रामनरेश त्रिपाठी

शिवा-बावनी छत्रपति शिवाजी महाराज के दरबारी कवि भूषण की लोक-प्रसिद्ध रचना है। इस पुस्तक में उसके प्रत्येक छन्द का गद्यानुवाद बड़ी ही मार्मिकता से दिया गया है। अब यह विद्यार्थियों और वीर-रस की कविता के प्रेमियों के लिये बहुत ही उपयोगी पुस्तक बन गई है। छपाई-सफ़ाई उत्तम; दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

HINDI FOLK-SONGS

by

A. G. SHIRREFF, I. C. S.

Art binding in cloth, Re. 1/-only

by V. P. P. Re. 1/7/-

AN APPRECIATION BY

His Excellency Sir Harry Haig, K. C. S. I.,

Governor of the United Provinces

(Through the Commissioner of Allahabad Division)

Commissioner's office
Allahabad, Oct. 21, 1936.

My dear Tripathiji,

I am desired by His Excellency Sir Harry Haig, K. C. S. I., Governor of the United Provinces to convey to you his thanks for your kindly sending to him your Gram Git *and an English translation by Mr. Shirreff of some of the songs. His Excellency has appreciated your effort in compiling the ballads of the people.*

Yours Sincerely

(Sd.) V. N. Mehta

OPINIONS

The Statesman

(*Calcutta; Oct. 21, 1936.*)

When Bishop Percy published his *Reliques* and when the Scots ballads were given to the world the ripples set up in the domain of literature spread far and wide. A year or so ago in a town in the United Provinces a member of the Indian Civil Service was translating folk-songs collected in the villages of Benares, Azamgarh, Ballia, Ghazipur and Jaunpore. He had the inspiration of using as his medium both the Lowland Scots speech and the rude vigorous diction of the *Reliques* and the result is before the public in *Hindi Folk-Songs* (By A. G. Shirreff, I. C. S., Hindi Mandir, Allahabad, Re. 1/-). But the romance of this excursion from Hindi into (mainly) Scots does not end there. It began ten years ago when a Brahmin scholar, Pandit Ram Naresh Tripathi, heard a country woman singing of her husband, who had gone to Calcutta to find work, that "The railway, my rival, has carried away my beloved." The boldness of the metaphor led him eventually to tour the eastern districts of the United Provinces collecting "12,000 songs and a priceless experience of village life."

"We see him (says Mr. Shirreff) sitting beneath his umbrella on the knife-edge boundary of a rice field,

scribbling notes of the songs sung by the wedding women, and sometimes, in the excitement of capturing a fresh lay, toppling over into the mud and slush below him. Or again standing, like Jonathan Oldbuck, outside a Chamar's cottage to record a ballad of love and chivalry recited by an aged crone. The strange phenomenon of a Brahmin gentleman pending his time in such persuits received different interpretations; he was an officer of the Criminal Investigation Department, a fugitive from justice or a town Lothario bent on village intrigue."

Pandit Ram Naresh Tripathi edited a selection of about 300 of these songs and from among these Mr. Shirreff has translated fifteen, bringing out all their pathos, their abundant humour, their sly digs at human weakness and their frequent beauty. They may be taken as typical of the music that rings through the villages of Northern India at times of weddings, feasts and other occasions of joy : so that he who would know what the ploughmen of Delhi sing as their bullocks haul water from the well may find it or its like in Mr. Shirreff's book. Divine and legendary persons are treated as human beings, as in the medieval carols and nativity plays of England; sometimes the villager tells of desperate deeds in the India of long ago: more often the burden of the song is made up of the trivial crosses of daily life. The maiden languishes for her lover, as in some of the

more polished lyrics that Mr. O. C. Gangoly has collected; the young wife complains against her mother-in-law ; the bride takes farewell of her parents; the husband bickers with his wife. It all gives a rare insight into the villager, especially when, as in this month and next, he is enjoying himself at one of his great festivals.

Pandit Ram Naresh Tripathi has indeed performed a service to the literature of India in making accessible these lays of the countryside. A similar labour of love was undertaken 50 years ago by Sir George Grierson in the districts around Patna. These songs have a vitality denied to many literary productions and to the Westerner their frequent resemblance to the traditional poetry of his own country is striking. "Annie Laurie" ("She's backit like the peacock; she's breistit like the swan") has its counterpart in the minstrelsy of the United Provinces.

The Hindu

Madras; Nov. 1, 1936.

Many of us seem to be hardly aware of the wonderful wealth of folk-poetry that our country is so rich in. Every one of our languages has a large body of such poetry, remarkable for its combination of terseness and quaintness, elegance and force. It is a pity that no attempt has as yet been made to collect the

folk-songs in some of the South Indian languages. In Bengal, Rabindranath Tagore has, by way of a hobby, made a collection of folk-songs, and also published an important essay on Bengali folk-poetry. In the United Provinces, Pandit Ram Naresh Tripathi has devoted several precious years to the collection of Hindi folk-songs; and out of his priceless store of some 12,000 songs, he has published a classified selection of about three hundred, with a very interesting introduction and simple prose renderings of the pieces. The Pandit has told us how he happened to fall under the spell of these folk-songs; indeed, he is to-day such a wholehearted admirer of their unsophisticated art that he ranks some of them above the poetry of Valmiki, or Kalidasa, or Tulsi Das.

Mr. Shirreff, who is a District Collector in the U. P., has also fallen under their spell, as evidenced by the thin but admirably printed and got-up volume under review, in which he has given us his own renderings, with brief, suggestive notes, of fifteen of them representing various types. This number is not too small to give one an idea of these different types as well as of their distinctive features as poetry. We have Puranic songs (often with homely modifications, as where Dasaratha is represented as offering to Kaikeyi two boons in return for her service in pulling out a nasty thorn from his toe !), war-songs, bridal-songs, songs which bring out all the humours and pathos of every

day village life. Some of them are masterpieces of compactness.

Mr. Shirreff's renderings are not literal, but they are unique in one way : what he has done is to cast each song into the form of its English or Scotch counterpart. This has been admirably done, and it serves to bring out so vividly the universality of all folk-poetry, though at the same time, he has had to sacrifice most of the atmosphere, along with the terseness which is one of the main beauties of the originals.

Mr. Shirreff pays a fine tribute to Pandit Tripathi, whose work, he thinks, "may have far-reaching results on Hindi poetry as Percy's *Reliques* and the rediscovery of the Scots ballads and songs had on English poetry in the latter half of the eighteenth century." He himself has admirably succeeded in drawing the attention of non-Hindi readers to a little-known department of Hindi poetry, and for this he deserves our cordial thanks.

A. R.

The Leader

Allahabad; Sept. 29, 1936.

Mr. Shirreff is one of those Indian civilians whose love of the literature of our country is matched by a keen understanding of it. An evidence of the fact is furnished by this dainty volume of *Hindi Folk-Songs*

recently brought out by him. The essay here presented to the reader was originally, though in a much curtailed form, published in the Journal of the Royal Asiatic Society of London, earlier in the year. It surveys the field of Hindi folk-poetry and gives renderings in lowland Scots and English verse of a number of songs in Hindi. Naturally, the renderings suggest to the writer parallel pieces from the folk-lore of his own country.

Mr. Shirreff has paid a well-deserved tribute to Pandit Ram Naresh Tripathi, whose labours in the cause of folk-lore have, in the main, made the present study possible. While it must be recognized that Pandit Ram Naresh is not the first in the field, and that half a century back, Sir George Grierson, then a civilian in Bihar, made a collection of similar songs, the credit belongs to the Indian Pandit for reviving in recent years an interest in these songs and for actually presenting them before the public in a substantial volume. Mr. Shirreff handsomely recognizes this service, when, speaking of the Pandit's work, he says that it 'may have far-reching results on Hindi poetry, as Percy's *Reliques* and the rediscovery of the Scots ballads and songs had on English poetry in the latter half of the eighteenth century'.

The folk-songs brought together by Pandit Ram Naresh undoubtedly open out a vast field before our eyes, and the present-day poets cannot do better than

turn for inspiration to these songs enshrining as they do the rich sentiments and traditions of the true sons and daughters of the soil.

Mr. Shirreff has rendered the songs with great sympathy and skill. If the translations may not always be found to be literal, they almost certainly keep close to the spirit that is breathed in the originals. 'Resma and Kotwal' is a beautiful rendering :

Resma was her daddy's darling, and her daddy for a treat
Often gave her as a favour, pounds and pounds of cloves to eat.
Resma darling, Resma darling, Resma darling, by and by
Somebody will be your husband. How I wish it might be I !
In her silk-embroidered bodice and her petticoat of blue
She was neat and she was sweet and most attractive to the view.
Resma darling———
Resma went one day to market in the dress described above,
And the Kotwal fell a total victim to the power of love.
Resma darling ———

'O my golden girl !' he babbled, 'Tell
me from what perfect mould
Thou departest, and what artist
formed thee of the purest gold ?'
Resma darling——

'O you silly old policeman, I should
like to burn your beard,
With your golden girls and moulding.
Stuff and nonsense !' Resma jeered.
Resma darling——

'One half of me by my daddy, if you
want to know, was given,
And the other by my mother; but my
beauty came from heaven.'
Resma darling——

The book is bound to arouse keen interest in our folk-lore, not only in India but outside as well. The originals of the songs are given in the Devanagari script as an appendix. The printing and get-up of the publication is excellent.

R. C. T.

The Hindustan Times
Delhi; Nov. 30, 1936.

It is necessary from time to time to 'discover' literature. Individual authors are often allowed to fade

into obscurity, and have to be dug up by a keen critic of a later period. This process has often to be gone through with whole masses of literary work—types of poetry, or prose that has failed to be appreciated as a result of the whims of literary fashion. One of the types which has perpetully been overlooked, and has needed special discovery, is the literature of folk-lore, the myths and songs of the common people. In England, the ballads which every Englishman now knows, were in danger of dying out of memory as civilization encroached upon the natural life of the countryside. The work of Percy, in his ballad collection, and Scott, in his work on the border ballads, saved for later generations the ballad poetry that we now value so much for their own sake, and for the literary theory they have enabled us to construct.

Something of the same idea as lay behind the work of Percy and Scott has inspired Pandit Ram Naresh Tripathi to collect from a large number of villages the songs which have been sung, and which might never be perpetuated. He has published them in the *Gram-Git* a selection, from the ten or twelve thousand that he heard, of the best from the point of view of poetry and folk-lore. The collection thus contains about three hundred ballads gathered from the lips of men working in the field, women celebrating a wedding, or young girls thinking of love. The language in which they appear is colloquial Eastern

Hindi, which baffles many a person who was under the impression that Hindi was his native tongue.

Mr. Shirreff has produced a little book which attempts to set out the meaning of this collection, for the benefit of English Readers, or rather people who would prefer not to read Hindi without knowing beforehand that the effort would be worth while. He has translated fifteen of the pieces, into what he imagines is the language of ballary. The nature of the translations he gives is clearly enough shown to prove his point that these are genuine folk-songs of the order of the old English ballads. They are characterized by the same directness and absence of introspection, the same 'voice of the people', the same appeal to the fundamental experiences of human life. Take for example this short swing-song, *The Tryst.*

Heavily the rain pours down,
And the wind in gusts is beating.
I shall spoil my pretty gown.
If I keep my promised meeting with my love.
Do not feor the rain may wet you;
Only fear our love to sever.
Love may pretty dresses get you;
But a pretty dress will never get you love.

Those who are learned in Indian culture, in Sanskrit and symbolism and ph losphy will find in this introduction to the *Gram Git* much to ponder and learn.

H. L.

SONGS OF MIRABAI

TRANSLATED FROM THE ORIGINAL HINDI

WITH INTRODUCTION AND NOTES

by

R. C. TANDAN

Price Re. One only : by V. P. P. Re. 1/7/-

OPINIONS :

A translation beautifully done, an edition neatly printed and got up—this is a welcome addition to the list of English books on Hindu religious literature. —*The Hindu*

The translations are excellent and the translator has spared no pains to make his book as attractive as possible. —*The Modern Review*

The translation has been made in simple and elegant language. The printing and get-up leave nothing to be desired. —*The Leader*

Mr. Tandan's translation is faithful to the original......will help to kindle in the reader a desire to

read and appreciate the songs in Hindi.—*The Hindustan Times*

The English translation has been creditabl doney.
—*The Bombay Chronicle*

The translation is evidently careful and scholarly. The English is always clear and good; it reads smoothly and not like a laborious translation, and in places, it is realy poetical. A very good piece of work.—
A. G. Shirreff I. C. S.

बच्चों का साहित्य

बाल-कथा-कहानी

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

हमारे यहाँ से इस नाम की एक सीरीज़ निकलती है, जिसमें अभी तक पंद्रह भाग तैयार हुये हैं। सभी भाग सचित्र हैं। रंग-बिरंगी स्याहियों में छपे हुये हैं। सब में चिकना और मोटा काग़ज़ लगा है। सब के कवर बड़े ही सुन्दर और आकर्षक हैं। कहानियाँ एक से एक बढ़कर रोचक और मनोहर हैं। बच्चे कहानियाँ पढ़कर लोट-पोट हो जाते हैं। इन पुस्तकों को पढ़कर बच्चे इतना प्रसन्न होते हैं कि उसका असर उनकी तन्दुरुस्ती पर पड़ता है। प्रत्येक बाल-बच्चेवाले परिवार में ये पुस्तकें अवश्य होनी चाहिये। प्रत्येक भाग का मूल्य छः आने हैं। छपाई-सफ़ाई और काग़ज़ देखते हुये यह दाम बहुत ही सस्ता है। डाक-व्यय एक पुस्तक का ॥); आठ आने में दो पुस्तक जा सकती है।

पूरे सेट का विवरण

पुस्तक	कहानियाँ	चित्र	मूल्य
बाल-कथा कहानी, पहला भाग	१९	२४	।=)
,, दूसरा ,,	१४	१९	।=)
,, तीसरा ,,	९	२७	।=)
,, चौथा ,,	६	१८	।=)
,, पाँचवाँ ,,	११	१७	।=)
,, छठा ,,	१२	१५	।=)

,,	सातवाँ	,,	९	११	।=)
,,	आठवाँ	,,	८	१३	।=)
,,	नवाँ	,,	१०	१७	।=)
,,	दसवाँ	,,	१	५	।=)
,,	ग्यारहवाँ	,,	६	९	।=)
,,	बारहवाँ	,,	९	२१	।=)
,,	तेरहवाँ	,,	८	१६	।=)
,,	चौदहवाँ	,,	७	८	।=)
,,	पंद्रहवाँ	,,	७	४	।=)
,,	सोलहवाँ	,,	(प्रेस में)		।=)

सम्मतियाँ

(१)

The Hindu (Madras, July 31, 1934)—

The story book is a valuable aid in the education of the child. It excites and gives exercise to its imagination, opens out before its mind's eye a world wider than its immediate surroundings and prepares the ground for the more serious type of education that follows. In this view, the Hindi Mandir Press has been doing useful work in publishing the present series of story book. Mr. Ram Naresh Tripathi's association with this work is a guarantee of its quality.

The present volume is the fifteenth in the series and conforms in all respects to the standard maintained in the series.

(२)

स्वराज्य—

बाल-कथा कहानी की पुस्तकें इतनी सरल और सौम्य भाषा में लिखी गई हैं कि बच्चे बहुत आसानी से कहानियों को समझ लेंगे। छपाई-सफ़ाई भी आकर्षक और सुन्दर है।

(३)

मतवाला—

छोटे-छोटे बालकों को मनोरञ्जन कर सकने योग्य कहानियों का यह सचित्र संग्रह ख़ूब नयनाभिराम छपा हुआ है। बालक-बालिकाएँ इसे पाकर नाच उठेंगी और खेलवाड़ी से खेलवाड़ी प्रकृतिवाले भी इसकी सुंदरता और मनोरञ्जकता से आकृष्ट होकर विद्याध्ययन में मन लगायेंगे, यह निश्चय है।

गुपचुप कहानियाँ

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

यह हिन्दी में बिलकुल नई चीज़ है। अबतक पढ़े-लिखे बच्चे ही कहानियों का रस लेते थे, अब हमने ऐसी कहानियाँ तैयार कराई हैं, जो पढ़ी नहीं जातीं, केवल देखी जाती हैं। इन्हें अक्षर न जाननेवाले बच्चे देखकर आप से आप कहानी बनाकर कहने लगते हैं।
दाम—पहला भाग ।), दूसरा भाग ।); डाक-व्यय ।।)।

मोहन-माला

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में बालकों के लिये बहुत ही मनोरंजक, उपदेश-प्रद और मीठी कवितायें दी गई हैं। सैकड़ों रंगीन और सादे चित्रों

से पुस्तक भरी पड़ी है। प्रायः प्रत्येक कविता सचित्र है। छपाई-सफ़ाई निहायत अच्छी है। मूल्य केवल ॥); डाक-व्यय ॥)।

बताओ तो जानें

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में बहुत से मनोरंजक गोरखधंधे संग्रह किये गये हैं। इससे बच्चों की बुद्धि बड़ी तेज़ हो जाती है। बड़ी अनोखी पुस्तक है। मूल्य केवल ।); डाक-व्यय ॥)।

नई कहानियाँ

लेखक—उदित मिश्र

ये कहानियाँ बिलकुल ही नये ढङ्ग की हैं। भाषा बड़ी ही सरल, कहने का ढङ्ग बड़ा ही मनोहर। उनका प्रभाव बच्चों पर स्थायी पड़ता है, और वे व्यवहार-कुशल, निरभिमानी, दीन-दुखियों के सहायक और अपने कुल के भूषण बन जाते हैं। प्रत्येक अच्छे माता-पिता को अपने प्यारे बच्चों के लिये यह पुस्तक ख़रीदनी चाहिये। छपाई-सफ़ाई उत्तम। अनेक चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य केवल छः आने; डाक-व्यय ॥)।

बानर-संगीत

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

बानर-संगीत नामक पुस्तक में बच्चों के कुछ राग-रंग उनके पुराने गानों से चुनकर और कुछ नये बनाकर खेलने, गाने और अभिनय के लिये दिये गये हैं। भाषा तो नई हुई, भावों की परिधि भी बढ़ा दी गई

है। गीतों के गाने और गाने के नियम के साथ उनकी स्वर-लिपियाँ भी दी गई हैं। स्कूलों में और घरों में यदि इन गीतों का प्रचार किया जायगा, तो बच्चों के जीवन में एक नया और पौष्टिक रस आयेगा, इसमें संदेह नहीं। छपाई-सफ़ाई बढ़िया; दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

हसू की हिम्मत

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

यह एक कहानी है। पद्य में है। बच्चों को घूमने-फिरने का शौक़ दिलाने और उनको साहसी बनाने के लिये यह लिखी गई है। इसमें ३२ चित्र भी हैं। छपाई-सफ़ाई सुन्दर; दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

नेता-पहेली

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

यह एक बड़ी ही रोचक पुस्तक है। इसमें ८ नक़शे दिये गये हैं, जिनमें प्रत्येक में ३२ खाने और प्रत्येक खाने में किसी एक नेता का नाम है। पूछनेवाला मनमें किसी नेता का नाम लेले तो बूझनेवाला इन नक़शों के द्वारा उसके मनमें लिये हुये नाम को बता सकता है। बच्चों को इससे बड़ा ही कौतूहल होता है। छपाई-सफ़ाई सुन्दर; पुस्तक सचित्र है। दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

बुद्धि-विनोद

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें कुछ कवितायें दी गई हैं। कविताओं में जान बूझकर कुछ ऐसे शब्द डाले गये हैं, जिनसे तरह-तरह के जानवरों, पक्षियों, पेड़ों,

नदियों, पहाड़ों, तरकारियों और फलों आदि के नाम निकलते हैं। नामों को खोज निकालने में बच्चों को बड़ा मज़ा आता है। इससे उनकी बुद्धि की चेतनता बढ़ती है छपाई-सफ़ाई सुन्दर; दाम ।); डाक-व्यय ॥)।

अशोक

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें सम्राट् अशोक की मनोरञ्जक जीवनी बहुत अच्छे ढंग से लिखी गई है। मूल्य केवल ।); डाक व्यय ॥)।

चन्द्रगुप्त

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इसमें भारत-सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक जीवन-चरित्र है। चन्द्रगुप्त की जीवन-कथा का इस प्रकार वर्णन किया गया है कि बिल्कुल कहानी का-सा आनन्द आता है। मूल्य केवल ।); डाक-व्यय ॥)।

हरिश्चन्द्र

लेखक—काशीनाथ त्रिवेदी

इसमें अयोध्या के राजा हरिश्चन्द्र का वृत्तान्त पढ़ने से बालकों में सत्य, प्रतिज्ञा-पालन, दृढ़ता, कष्ट-सहन और उदारता आदि गुण भली-भाँति मालूम हो जाते हैं। प्रत्येक बालक को ऐसी पुस्तक पढ़नी चाहिये। मूल्य केवल ।); डाक-व्यय ॥)।

महात्मा बुद्ध

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इस पुस्तक में बड़े मनोरञ्जक और महत्वपूर्ण ढंग से महात्मा बुद्ध की जीवनी दी गई है। गौतम बुद्ध एवं उनके धर्म के संबन्ध में बच्चों को जानकारी देने के लिये यह पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है। पुस्तक बच्चों के बड़े काम की है। मूल्य केवल ।) ; डाक-व्यय ॥)।

आल्हा

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

आल्हा वीर-रस की प्रसिद्ध पुस्तक है। इस पुस्तक में त्रिपाठीजी ने आल्हा क्या है, आल्हा का परिचय, आल्हा की लड़ाइयाँ, आल्हा के व्यक्तियों का परिचय, आल्हा का भूगोल, संक्षिप्त कथा आदि अध्यायों में उसी आल्हा का पूरा परिचय दे दिया है। पुस्तक अच्छे ढंग से सरल भाषा में लिखी गई है। बालकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। मूल्य केवल ।) ; डाक-व्यय ॥)।

सम्मति

(१)

प्रताप—

प्रस्तुत पोथियाँ बालकों के लिये बहुत ही उपयोगी हैं। आवरण-पृष्ठ के आकर्षण के साथ-साथ कथानक भी अत्यन्त आकर्षक और मनोरञ्जक है। लेखन-शैली तो कमाल की है। सम्राटों की जीवन-कथा का इस प्रकार चयन किया गया है कि बिल्कुल कहानी का आनन्द आता है। साथ ही साथ सम्पूर्ण कथानक ऐतिहासिक सत्य से परिपूरित है। भाषा की सरलता सोने में सुगन्ध है। लेखक का प्रयत्न

सर्वथा प्रशंसनीय है। बालकों को इन पोथियों से लाभ उठाना चाहिये। विद्यालय ऐसी पुस्तकों को शिक्षा का साधन बनावें, तो विशेष लाभ होवे।

हिन्दी की नई रीडरें

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

इन रीडरों में जो पाठ रक्खे गये हैं, उनमें बालक-बालिकाओं को देशभक्त, स्वात्माभिमानी, समाज-सेवक, सभ्य और सदाचारी बनाने की पूरी शक्ति है। इन रीडरों के पढ़ाने से बालक-बालिकाओं में विलासिता के बदले सादगी, उच्छृङ्खलता के बदले सत्कुलाचरण और अपव्यय के बदले मितव्ययता की आदत पड़ेगी। ये रीडरें स्कूलों का काया-पलट कर देंगी। ऐसी रीडरों से शिक्षा का इतिहास ही बदल जायगा। शिक्षा-प्रेमी सज्जनों से हमारा अनुरोध है कि वे इन रीडरों को अपने स्कूल-पाठशालाओं में स्थान दें और दिलावें। दोनों प्रकार की रीडरें मिडिल-कक्षा तक के लिये तैयार हैं। मूल्य भी इनका बहुत ही कम रक्खा गया है। रीडरों के नाम और दाम ये हैं:—

बालकों के लिये		कन्याओं के लिये	
हिन्दी-प्राइमर नं० १, २ प्रत्येक	-)॥	हिन्दी-प्राइमर नं० १, २ प्रत्येक	-)॥
हिन्दी-ज्ञानोदय—पहला भाग	=)	कन्या-शिक्षावली, पहला भाग	=)
हिन्दी-ज्ञानोदय—दूसरा भाग	≡)	कन्या-शिक्षावली, दूसरा भाग	≡)
हिन्दी-ज्ञानोदय—तीसरा भाग	।-)	कन्या-शिक्षावली, तीसरा भाग	।)
हिन्दी-ज्ञानोदय—चैाथा भाग	॥)	कन्या-शिक्षावली, चौथा भाग	।-)
हिन्दी-ज्ञानोदय—पाँचवाँ भाग	॥-)	कन्या-शिक्षावली, पाँचवाँ भाग	।≡)
हिन्दी-ज्ञानोदय—छठा भाग	॥=)	कन्या-शिक्षावली, छठा भाग	॥)
डाक-व्यय	॥।=)	डाक-व्यय	॥।=)

हिन्दी-पत्र-शिक्षक

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

छोटेपन ही से पत्र लिखने की शिक्षा बालकों को देनी चाहिए। इसमें प्राचीन और नवीन शैली तथा अन्यान्य व्यवहार-संबंधी पत्रों के नमूने दिये गये हैं। मूल्य ≈); डाक-व्यय ॥)।

परियों की कहानियाँ

पहला भाग

लेखक—आनन्दकुमार

परियों की कहानियाँ संसार के सभी मुल्कों में बहुत पुरानी चीज़ हैं। इस पुस्तक में बड़ी ही मज़ेदार कहानियाँ दी गई हैं। पढ़ते समय एक सुन्दर सपना-सा जान पड़ता है। छपाई-सफ़ाई की सुन्दरता सचमुच परियों-जैसी है। दाम छः आने; डाक-व्यय ॥)।

परियों की कहानियाँ

दूसरा भाग

लेखक—द्वारकाप्रसाद

इसकी कहानियाँ भी एक से एक बढ़कर रोचक हैं।
दाम छः आने; डाक-व्यय ॥)।

राक्षसों की कहानियाँ

लेखक—आनन्दकुमार

राक्षसों की कहानियाँ बच्चों को विशेष प्रिय होती हैं। उनकी रुचि

का ध्यान रखकर इस पुस्तक में छः बहुत ही दिलचस्प कहानियाँ लिखी गई हैं। कहानियों की भाषा बहुत ही सरल और चुहचुहाती हुई है। चित्रों से पुस्तक भरी पड़ी है। मूल्य केवल ।=) ; डाक-व्यय ॥)।

जादू की कहानियाँ

लेखक—आनन्दकुमार

यह पुस्तक अपने ढंग की अनोखी है। इसमें बड़ी ही रोचक पुरानी कहानियाँ एकत्र की गई हैं, जो मनुष्य-समाज में न जाने किस युग से मुँह से मुँह में चली आ रही हैं। सभी कहानियाँ सचित्र हैं। मूल्य केवल ।=); डाक-व्यय ॥)।

इतिहास की कहानियाँ

लेखक—आनन्दकुमार

इसमें पुराने वीर महापुरुषों की सच्ची कहानियों का वर्णन सरलतया मनोहर ढंग से किया गया है। पुस्तक की भाषा बहुत सरल तथा चित्ताकर्षक है। स्वदेशी वीर पुरुषों के अतिरिक्त विदेशी वीर पुरुषों का भी वर्णन इसमें किया गया है। पुस्तक बालकों के बड़े काम की है। मूल्य केवल ।=) ; डाक-व्यय ॥)।

बलभद्दर

लेखक—आनन्दकुमार

यह छोटी-सी पुस्तक बालकों के बड़े काम की है। इसकी भाषा ऐसी सरल और मनोहर है कि बहुत ही आसानी से बच्चों की समझ

में आ सकती है। यह इतने अच्छे ढंग से लिखी गई है कि पुस्तक को एक बार हाथ में लेकर बिना समाप्त किये रहा ही नहीं जाता। इसकी भाषा बड़ी ही सरल और मीठी है। मूल्य केवल ≡); डाक-व्यय ॥)।

ग्रामगीत-सीरीज़

श्री त्रिपाठीजी ने सन् १९२५ से ग्रामगीतों का संग्रह करना प्रारम्भ किया था। तब से अब तक १५००० के लगभग गीत संगृहीत हो चुके हैं। इन गीतों में भारतवर्ष के प्रायः समस्त प्रान्तों के गीत हैं। सबसे अधिक युक्तप्रान्त और विहार के हैं। ग्रामगीतों पर हमने एक मोटी पुस्तक प्रकाशित की है जिसकी सूचना और उस पर आई हुई सम्मतियाँ इस सूचीपत्र के पृष्ठ ७ पर दी गई हैं। उसे तो ग्रामगीत विषय की एक भूमिका-मात्र समझना चाहिये। कुल ग्रामगीतों पर तो उसके जैसी पचासों पुस्तकें प्रकाशित हों, तब भी वे न चुकेंगे। सब ग्रामगीतों को अर्थ और टीका-टिप्पणी सहित प्रकाशित करने में बहुत समय की दरकार है। तबतक ग्रामगीतों के प्रेमियों को हम उनके मधुर-रस से वंचित नहीं रखना चाहते। इससे हमने मूल गीतों को अलग-अलग पुस्तकाकार प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया है। प्रत्येक पुस्तक की पृष्ठ-संख्या ८० होगी और मूल्य केवल चार आने। छपाई-सफ़ाई तो बढ़िया है ही, टाइप भी कुछ मोटा लगाया गया है, जिससे गाँव के साधारण पढ़े-लिखे लोग भी आसानी से उन्हें पढ़ सकें।

ग्रामगीतों में देहात के स्त्री-पुरुषों के सुख-दुःख, प्रेम, विरह, प्रकृति-निरीक्षण और परस्पर हास-विलास के अनूठे चित्र हैं। इनको तो दर-असल में जीवन-संगीत कहना अधिक सार्थक होगा। दूसरे देशों में ग्रामगीत पर बहुत बड़ा साहित्य पढ़ने को मिलता है। हिन्दी में क्या, हिन्दुस्तान में कहना चाहिये, त्रिपाठीजी का यह पहला प्रयत्न है और इसकी प्रशंसा वायसराय से लेकर महात्मा गाँधी तक कर चुके हैं।

स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

१—एक रुपया प्रवेश फ़ीस देकर प्रत्येक सज्जन "हिन्दी-मन्दिर-ग्रंथमाला" के स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। यह एक रुपया न तो कभी वापस किया जाता है, और न किसी हिसाब में मुजरा दिया जाता है।

२—स्थायी ग्राहकों को ग्रंथमाला के कुल ग्रन्थ—पूर्व प्रकाशित और आगे प्रकाशित होनेवाले—पौनी कीमत में दिए जाते हैं।

३—किसी उचित कारण के बिना यदि किसी ग्रन्थ का वी० पी० वापस आता है, तो ग्राहक का नाम ग्राहक-श्रेणी से अलग कर दिया जाता है।

४—प्रवेश फ़ीस का एक रुपया मनीआर्डर से पेशगी भेजना चाहिए। किसी ग्रन्थ के वी० पी० में भी प्रवेश फ़ीस जोड़ ली जा सकती है।

५—स्थायी ग्राहक केवल एक ही प्रति पौनी कीमत में पा सकते हैं। हाँ, अधिक प्रतियाँ लेना चाहें, तो प्रति पुस्तक एक रुपया के हिसाब से अधिक देकर चाहे जितनी प्रतियाँ ले सकते हैं।

पता—हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पूरे सेट का मूल्य १०६=)।। : एक साथ लेने पर केवल ८०) में।

कविता-कौमुदी, पहला भाग	३)
कविता-कौमुदी, दूसरा भाग	३)
कविता कौमुदी, तीसरा भाग	३)
कविता-कौमुदी, चौथा भाग	३)
कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग	३)
कविता-कौमुदी, छठा भाग	३)
कविता-कौमुदी, सातवाँ भाग	३)
पथिक खण्ड-काव्य	।।)
मिलन ,,	।।)
स्वप्न ,,	।।)
मानसी—त्रिपाठीजी की फुटकर कविताएँ	।।)
हिन्दी-पद्य-रचना—पिंगल	।।)
भूषण-ग्रन्थावली, सटीक	१)
स्वप्न-चित्र	।।)
हिन्दुस्तानी कोष	२)
जयंत—(नाटक)	।।)
प्रेम-लोक—(नाटक)	।।)
तरकस (कहानियाँ)	।।)
रामचरितमानस, मूल	२)
रामचरितमानस, सटीक—(बड़ा आकार)	५)
रामचरितमानस, सटीक—(छोटा आकार)	३)
तुलसीदास और उनकी कविता	३)
तुलसीदास के बारह ग्रंथ	३)
काश्मीर (सचित्र, सजिल्द)	५)
घर का वैद्य	१२)
क्षय-रोग	६)
घाघ और भड्डरी (प्र० हिन्दुस्तानी एकेडेमी)	३)
चिन्तामणि—भजनों का संग्रह	।।)
कुल-लक्ष्मी	।।)
दम्पति-सुहृद्	।।)
सद्गुरु रहस्य	१)
अयोध्या-कांड सटीक (सजिल्द)	।।।)
हिन्दुओं के व्रत और त्योहार	२)
अँग्रेज़ी-शिष्टाचार	२)
हिन्दी-का संक्षिप्त इतिहास	।=)
सुकवि-कौमुदी	।।।)
नीति-शिक्षावली (प्रेस में)	।।)
कौन जागता है ? (नाटक)	।।)
ग़ज़ल-संग्रह	२।।।)
युरोप की कहानियाँ	२।।)
बीस कहानियाँ	२)
हिमानी (कविता)	।।)
पॉकेट डिक्शनरी (हिन्दी-अँग्रेज़ी)	१।।)
मारवाड़ के मनोहर गीत	।)
सुदामा-चरित	।)
पार्वती-मंगल	।)
शिवा-बावनी	।)
बानर-संगीत	।)
हसू की हिम्मत	।)
नेता-पहेली (प्रेस में)	।)
बुद्धि-बिनोद (प्रेस में)	।)